

प्रश्न सं०-50

वर्तमान समय में सामाजिक आंदोलनों की भूमिका में प्रकाश डालें ?

उत्तर— स्वतंत्रता के उपरांत सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन हुए, इनमें बहुत से विषय शामिल रहे। वर्तमान समय में विभिन्न विषय उभर रहे हैं, जो कल्याणकारी राज्य के दायरे को बढ़ा रहे हैं। भारत 140 करोड़ से अधिक जनसंख्या वाला देश हो गया है, बढ़ती हुई जनसंख्या और उनकी अपेक्षाओं में संतुलन की आवश्यकता है। निम्न बिंदु जो तेजी से उभर रहे हैं और जिन्हें व्यापक जन समर्थन प्राप्त हो रहा है—

- (i) R.T.I. एक्ट "जो तेजी से सरकारी जवाबदेही में वृद्धि कर रहा है"
- (ii) कृषि संकट एवं किसानों की आत्महत्या
- (iii) एक माता पिता परिवारों में वृद्धि जो पारिवारिक विघटन का संकेत है
- (iv) अवसाद तथा मानसिक रोगियों की वृद्धि
- (v) बच्चों में कुपोषण की समस्या "जंक फूड/फास्ट फूड"

ये कुछ विषय हैं जो वर्तमान 10 वर्षों में देखे जा रहे हैं। इनकी संख्या अनगिनत है, सामाजिक आंदोलन द्वारा समय-2 पर इन विषयों में जागरूकता तथा वैचारिक मेशन होता रहता है। सर्वसहमति किसी भी विषय में संभव नहीं पर, सुधार के सार्विक प्रयास होने चाहिये।

A0703017

प्रश्न सं० - 49

वैश्विक स्तर पर सामाजिक आंदोलनों की भूमिका पर प्रकाश डालिये?

उत्तर— द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरान्त सम्पूर्ण विश्व एक बहुआयामी व्यवस्था बन गया है, जिसका केन्द्रबिन्दु "संयुक्त राष्ट्र संघ" (U.N.O.) है। सभी वैश्विक समस्याओं को मानवता के आव्हान पर देखा जाना चाहिये। निम्न लिखित बिन्दु हैं, जिन पर वैश्विक स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं—

- (i) सम्पूर्ण विश्व में युद्धों/अराजकता से उत्पन्न "शरणार्थी समस्या"
- (ii) पर्यावरण संरक्षण संबंधी प्रयास
- (iii) लोकतंत्र को समर्थन एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
- (iv) अल्पसंख्यकों के हितों का वैश्विक समर्थन
- (v) बाल श्रम का बहिष्कार
- (vi) महिला शिक्षा तथा लैंगिक समानता
- (vii) महिलाओं के विरुद्ध अपराध/हिंसा/दुर्व्यवहार पर रोक

वैश्विक स्तर पर विभिन्न संगठन तथा गैर सरकारी संगठन (NGO's) अपना कार्य कर रहे हैं। प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया इन विषयों को वैश्विक स्तर पर प्रचार-प्रसार कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ समय-2 पर विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय या क्षेत्रीय कार्यक्रमों का आयोजन कर के, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विषयों पर चर्चा करता रहा है।

A070301T

प्रश्न सं०-48

युवा आंदोलनों पर प्रकाश डालिये?

उत्तर- युवा आंदोलन "युवा असंतोष" की अभिव्यक्ति है, इसकी "समाज में युवाओं द्वारा सामूहिक कुण्ठा की अभिव्यक्ति है।"

युवा आंदोलनों को तीन परिप्रेक्ष्यों में देखा जा सकता है—

- (i) युवाओं में असंतोष
- (ii) युवाओं के कारण अशांति
- (iii) देश में सामाजिक अशांति और उसका युवाओं पर प्रभाव

आंदोलन के लिए युवाओं में प्रेरणा

बाहरी स्रोतों द्वारा रोक

↓
असंतोष

↓
आंदोलन के लिए उकसाहट

निवर्तन (Withdrawing)

↓
स्रोतों के विरुद्ध प्रत्यक्ष आंदोलन

↓
विस्थापित आंदोलन

अब समय आ गया है, कि इस विशाल युवा शक्ति जो अब तक उपेक्षित रही है, को विकास के लिए एवं सामाजिक अन्याय को दूर करने के लिए और राष्ट्रीय सामूहिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लगाया जाये।

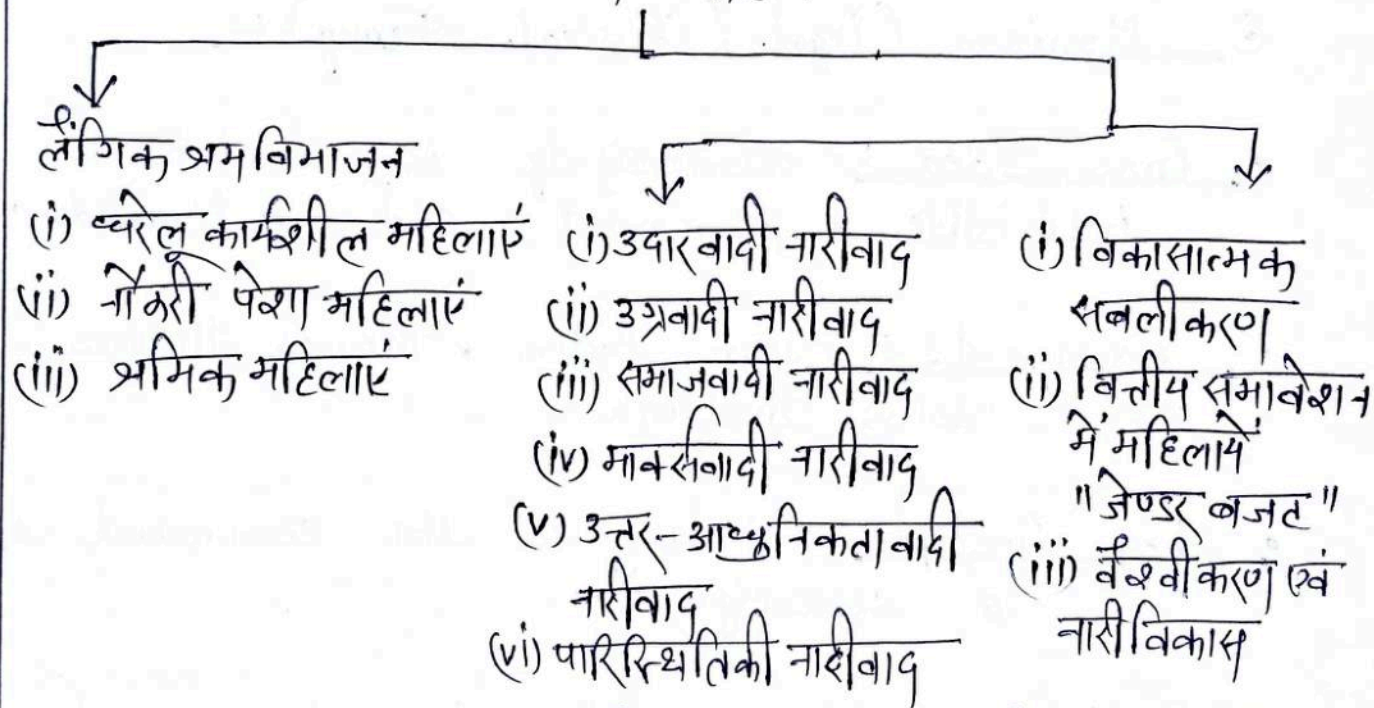
Do 70301T

प्रश्न सं० - 47

महिलाओं के आंदोलनों ने क्या परिवर्तन किया स्पष्ट करें ?

उत्तर- महिला आंदोलनों के केन्द्र में "लैंगिक समानता" का विचार महत्वपूर्ण रहा है। 19वीं शताब्दी तथा 20वीं शताब्दी के मध्य में महिला सुधार एवं अधिकार आंदोलन हुए। सती प्रथा उन्मूलन, बाल विवाह उन्मूलन, बहुपत्नी विवाह निषेध तथा विधवा पुनर्विवाह जैसे- सामाजिक विषय रहे हैं। महिला आंदोलनों के द्वारा संगठित महिला समाज-यन्त्र का विषय रहा है। स्वतंत्रता के उपरान्त महिला विषयक सुधार तथा अधिकार सरकारों की प्राथमिकता रहे हैं।

महिला आंदोलन



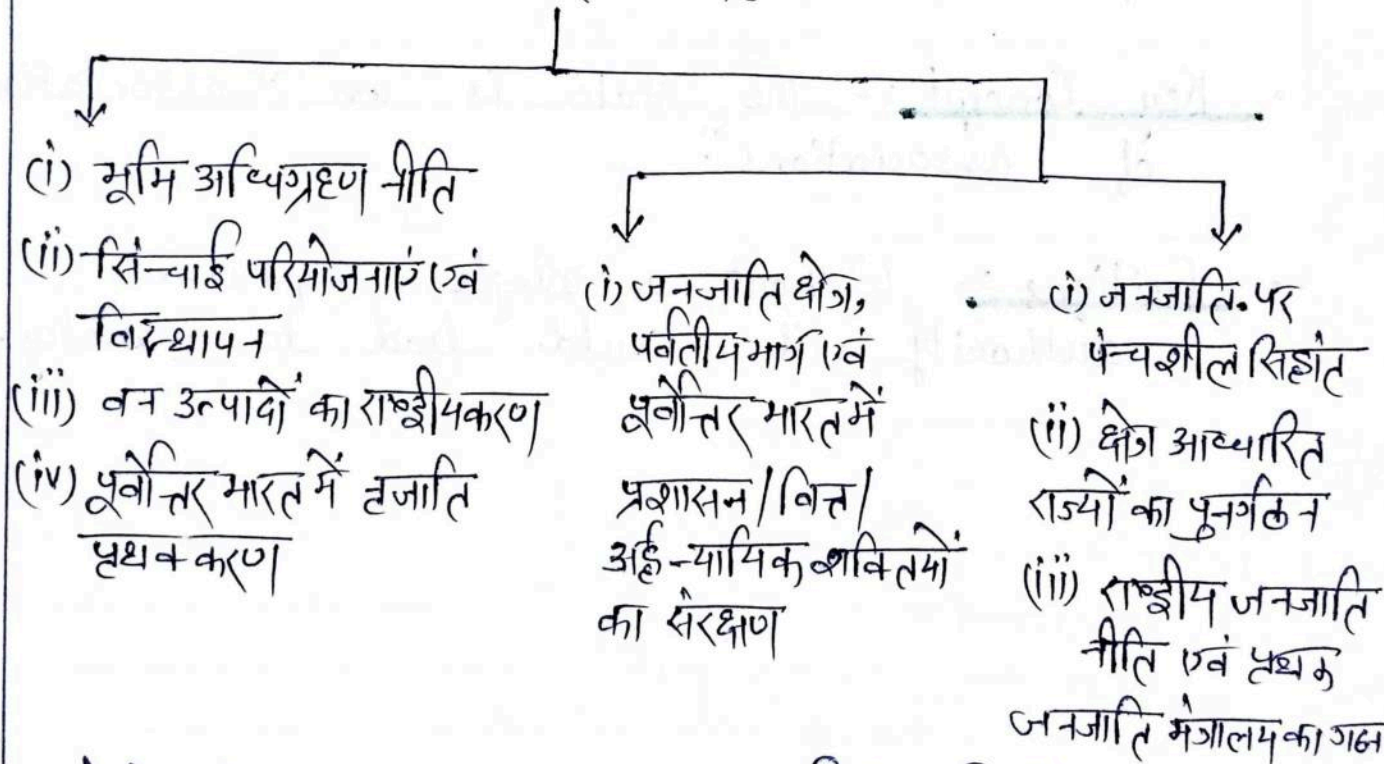
"समतलमूलक समाज, अवसर की समानता तथा मानवीय गरिमा" ये सभी विचार हमी सार्थक होंगे जब लैंगिक समानता को पूर्ण रूपेण लागू किया जायेगा। सरकार लैंगिक समानता के लिए सतत उल्लेखनीय प्रयास कर रही है, इसके सकारात्मक परिणाम बढ़ती हुई "स्त्रीशिक्षा" के रूप में देखा जा सकता है।

प्रश्न सं०-46

जनजाति आंदोलन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- देश भर में फैले विभिन्न जनजाति समूहों के मुद्दों को समान हो सकते हैं, लेकिन उनके विवेक भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। जनजाति आंदोलनों में से कई अविकसित रूप से महर्षि भारत की तथाकथित "जनजाति बेल्ट" में स्थित रहे हैं जैसे - छोटानागपुर व संथाल परगना में स्थित संथाल, दी, ओरांव व मुण्डा। नव गठित "आरक्षण प्रदेश" का मुख्य भाग इसी से बना है।

जनजाति आंदोलन



पूरे देश में लगभग 705 जनजातियां फैली हुई हैं। "आदिमश्रुण, विशिष्ट संस्कृति, भौगोलिक प्रथमकरण, संपर्क एवं पिछड़ापन" ये सभी जनजाति आंदोलनों का केन्द्र रहे हैं। देश में समकालीन जनजाति स्थिति के एक समग्र विचार को संगठित करने की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास किए जा रहे हैं।

A070301T

प्रश्न सं० - 45

पिछड़े वर्ग एवं जातियों के आंदोलन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर— पिछड़ी जातियों, वर्गों का राजनीतिक इकाईयों के रूप में उदय औपनिवेशिक तथा उपनिवेशोत्तर दोनों संदर्भों में हुआ है। औपनिवेशिक राज प्रायः अपनी संरक्षिता का वितरण जाति के आधार पर करते थे। इसलिए लोगों का संस्थागत जीवन में सामाजिक तथा राजनीतिक पहचान के लिए अपनी जातियों में रहना अर्थात् अर्थपूर्ण होता था।

"पिछड़े वर्गों" की सेवा का प्रयोग देश के विभिन्न भागों में 19वीं शताब्दी के अंत से किया जा रहा है। इसका अधिक विस्तृत प्रयोग मद्रास प्रेसीडेंसी में 1872 से, मैसूर के राजशाही राज्य में 1918 से, बम्बई प्रेसीडेंसी में 1825 से किया जा रहा है।

प्रथम पिछड़ा वर्ग आयोग (काका कालेलकर) तथा द्वितीय पिछड़ा वर्ग आयोग (बी.पी. मंडल) ने पिछड़े वर्ग एवं जातियों में एक नवीन राजनीतिक चेतना तथा जाति अस्मिता को जाग्रत किया है। आरक्षण नीति 1990 (सामाजिक-न्याय का समतामूलक विभेदकारी सिद्धांत) OBC को 27% आरक्षण की संवैधानिक अवसर की समानता की पूर्ति करता है। सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से वंचित वर्ग को समाज की मुख्य धारा में लाने का प्रयास है।

वर्ग-चेतना के रूप में "दलित आंदोलन" को स्पष्ट करें?
उत्तर— दलितों के सामाजिक आंदोलन एक विशिष्ट चरित्र दर्शाते हैं। मात्र आर्थिक शोषण अथवा राजनीतिक दबाव के संदर्भ में इसकी व्याख्या शोषजनक रूप से नहीं की जा सकती है। यह आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्णय का स्थान पाने का संघर्ष है। यह अस्पृश्यता द्वारा उपलब्धित कलंक को समाप्त करने का संघर्ष है। इसे स्पर्श के लिए संघर्ष कहा जाता है।

"दलित" शब्द का प्रयोग आमतौर पर मराठी, हिन्दी, गुजराती तथा अन्य भारतीय भाषाओं में गरीब तथा उत्पीड़ित लोगों के अर्थ में किया जाता है। इसका गर संदर्भ में प्रथम प्रयोग मराठी में 1970 के दशक के प्रारम्भ में बाबा साहेब आंबेडकर के अनुयायियों ने नव-बौद्ध आंदोलनकारियों के संदर्भ में किया था। इस शब्द में ही प्रदूषण, कर्म तथा न्यायोन्वित जाति संरक्षण की स्वाभाविक अस्वीकृति है। दलित साहित्य सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्रांति का आह्वान करता है। जबकि कुछ लोग सम्मान तथा पहचान के लिए सांस्कृतिक संघर्ष पर बल देते हैं, अन्य समाज की संरचनात्मक विशेषताओं के साथ ही आर्थिक

A070301T

प्रश्न सं०-43

कामगारों (श्रमिक) के आंदोलन से आप क्या समझते हैं?
उत्तर- भारत में कारखानों से उत्पादन 1860 के प्रारम्भिक मार्ग में शुरू हुआ। औपनिवेशिक काल की प्रारम्भिक अवस्थाओं में मजदूरी बहुत सस्ती थी, क्योंकि औपनिवेशिक सरकार ने उनके वेतन और कार्य दशाओं के लिए कोई नियम नहीं बनाए थे। हालांकि मजदूर संघ बाद में बने लेकिन कामगारों ने विरोध पहले भी किया।

श्रमिक आंदोलन

- 1920 बम्बई "एटक" (A.I.E.T.C) की

स्थापना

- 1926 का मजदूर संघ अधिनियम

- बम्बई की कपड़ा मिलों में हड़तालों की लहर चली

(i) मुंबई, अहमदाबाद के कपड़ा मिल श्रमिक

(ii) आसाम के चाय बागान श्रमिक

(iii) कोलकाता, मद्रास के बंदरगाह श्रमिक

(i) समान कार्य समान वेतन

(ii) अवकाश का प्रावधान

(iii) श्रमिक कार्य दशाओं में सुधार

(iv) सामूहिक सौदेबाजी स्वमेवस्था का प्रावधान

भूमण्डलीय करण के वर्तमान संदर्भ में रोजगार का स्वरूप परिवर्तित हो गया है। श्रम प्रयोग तथा श्रम समस्याओं में परिवर्तन की प्रकृति देखने को मिलती है। मजदूर संघों के समक्ष भी एक नयी प्रकृति की चुनौतियाँ हैं।

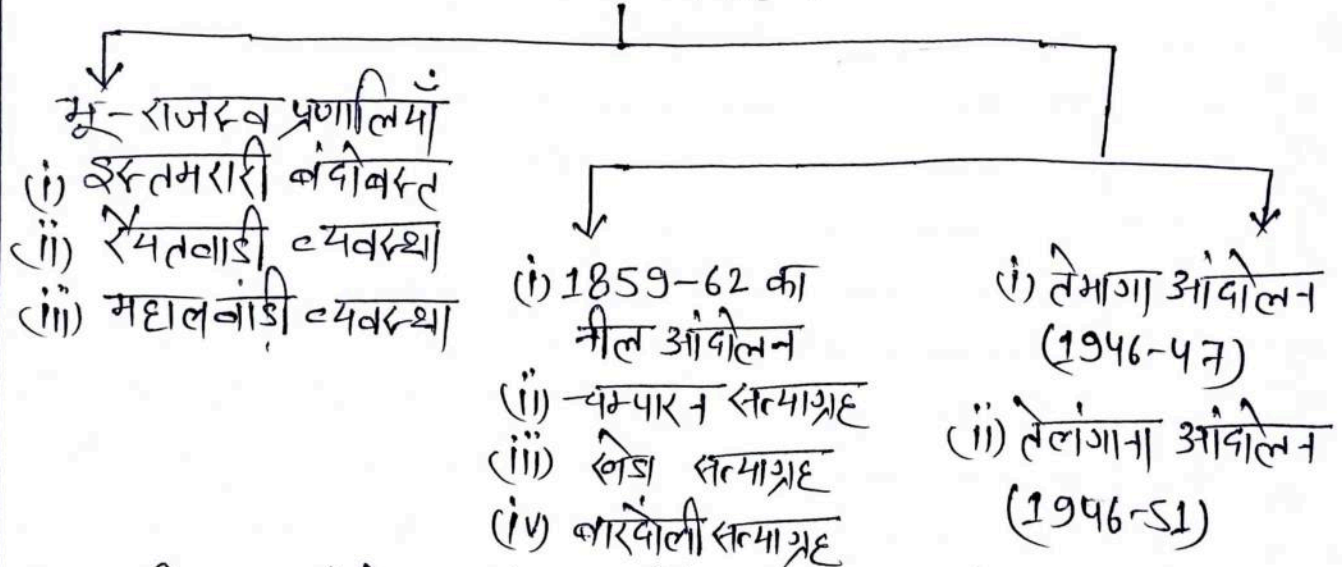
A070301T

प्रश्न सं०-42

कृषक (किसान) आंदोलन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर— किसान आंदोलन या कृषक संघर्ष औपनिवेशिक काल से पहले के दिनों में शुरू हुआ। यह आंदोलन 1858 और 1914 के बीच स्थानीयता, विभाजन और विशिष्ट शिकायतों से सीमित होने की ओर प्रवृत्त हुआ। किसानों की केन्द्रीय समस्या भूमि थी।

किसान आंदोलन



नए किसान आंदोलन पंजाब और तमिलनाडु में 1970 के दशक से प्रारम्भ हुए। ये आंदोलन क्षेत्रीय आन्दोलनों पर संगठित थे, दल रहित थे और इसमें कृषक के स्थान पर किसान जुड़े थे। नए किसान आंदोलन की मांगें थी— कीमत वसूली, लाभ प्रद कीमतें, कृषि निवेश की कीमतें, टर्क्स और उर्वार की वापसी। नए किसान आंदोलन धीरे-2 दबाव समूह का रूप लेता जा रहा है।

A0703017

प्रश्न सं०-41

पारिस्थितिकीय आंदोलन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- आधुनिक काल में प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित उपयोग तथा विकास के ऐसे प्रतिरूपों का निर्माण हुआ, जिससे पहले से ही घटते प्राकृतिक संसाधनों के अधिक शोषण की मांग बढ़ती है, के विषय में बहुत चिंता प्रकट की जाती रही है। रामचंद्र गुहा की पुस्तक "अनक्वाबल बुइस" के अनुसार "अर्थव्यवस्था, पारिस्थितिकीय तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व की चिंताएँ चिपको आंदोलन का आधार थीं।"

पारिस्थितिकीय आंदोलन

↓
"प्रदूषण मुक्त विश्व"

की संकल्पना
विश्व के स्तर पर
ग्लोबल वार्मिंग को
जन समर्थन मिल
रहा है। ग्लोबल वार्मिंग
ने समस्या के साथ
ही ग्रीन इनर्जी को
प्रोत्साहित किया है।

- ↓
- (i) सतत विकास
 - (ii) वन्य जीव संरक्षण
 - (iii) सामाजिक वानिकी
 - (iv) आपदा प्रबंधन
 - (v) प्राकृतिक पर्यावासों का संरक्षण
 - (vi) ब्लू इकोनमी

↓

- "जल, जंगल, जमीन आंदोलन"
- भूगर्भ जल में वृद्धि के लिए जागरूकता
- शिक्षा को पर्यावरण संरक्षण के साथ जोड़ने की अपील

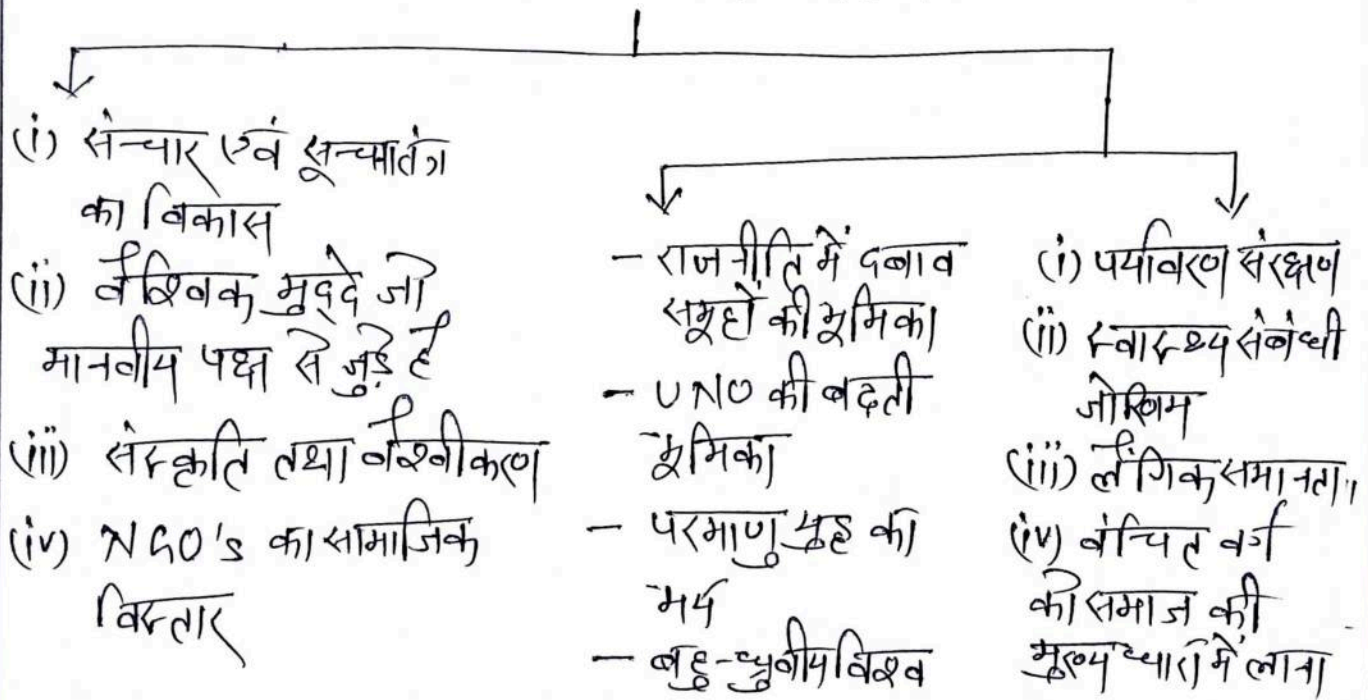
A0703017

प्रश्न सं०-40

नव-सामाजिक आंदोलनों की भूमिका की व्याख्या करें?

उत्तर- "कल्याणकारी राज्य" के दखन ने वर्ग आधारित शोषण एवं असमानता जैसे मुद्दे केन्द्रीय विचारधारा के अंग नहीं बन पा रहे हैं। अतः "नव-आंदोलन" विषय समाज में सत्ता वितरण को बदलने के स्थान पर जीवन की गुणवत्ता जैसे "स्वच्छ पर्यावरण" के बारे में विचारवान हैं।

नव-सामाजिक आंदोलन



जेल ओमवेत ने अपनी पुस्तक "रीड-वैटिंग रिवोल्यूशन" में नव-सामाजिक आंदोलनों को समग्रता के रूप में देखा है। जैसे - वर्ग आधारित आंदोलन - योहे वो महिला आंदोलन है या कृषक आंदोलन, सभी में सामूहिकता तथा वर्ग-चेतना का विकास हो रहा है। वर्तमान में नव-सामाजिक आंदोलनों ने सूक्ष्म समस्याओं को राष्ट्रीय या वैश्विक स्तर पर उठाया है।

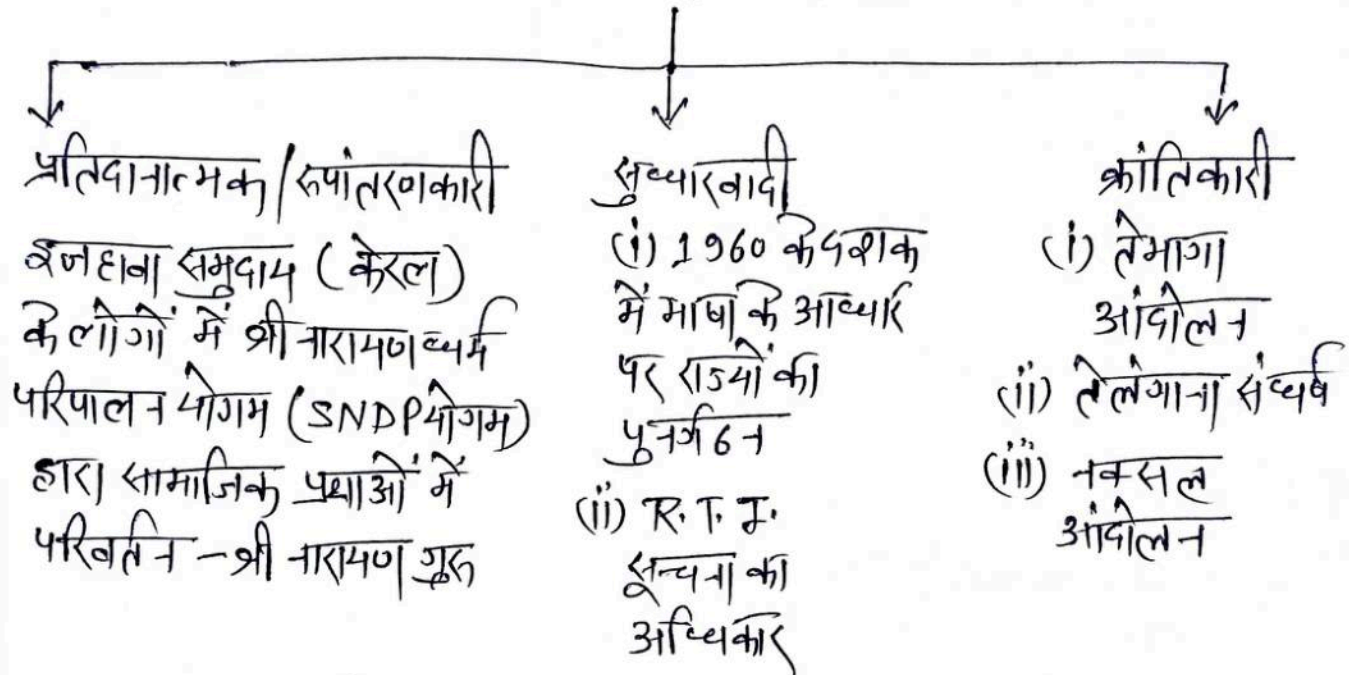
20703017

प्रश्न सं०-39

सामाजिक आंदोलनों के प्रकारों की व्याख्या करें?

उत्तर- सामाजिक आंदोलन के कई प्रकार होते हैं। 3-हैं निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है —

सामाजिक आंदोलन



जब हम सामाजिक आंदोलनों को वस प्रारूप के आव्यार पर वर्गीकृत करते हैं, तो पाते हैं कि बहुत से आंदोलनों में प्रतिद्वानात्मक, सुधारवादी तथा क्रान्तिकारी तत्व एक साथ मिले होते हैं। एक सामाजिक आंदोलन की अभिमुखता समय के साथ बदलती रहती है, उदाहरणार्थ कोई आंदोलन प्रारम्भ में क्रान्तिकारी उद्देश्य वाला हो और फिर वह सुधारवादी बन जाए!

प्रश्न सं०-38

सामाजिक आंदोलन के "संसाधन गतिशीलता" सिद्धांत की व्याख्या करें?

उत्तर- मनकर ओल्सन की पुस्तक "द लाजिक ऑफ़ क्लैक्टिव एक्शन" में तर्क दिया गया है कि सामाजिक आंदोलन में स्वहित न्याहने वाले विवेकी, व्यक्तिगत अभिनेताओं का पूर्ण योग है। ओल्सन का सिद्धांत विवेकी, अधिकतम उपयोगिताकारी व्यक्ति के अभिप्राय पर आधारित है।

मैथी और जेल्ड ने "संसाधन गतिशीलता" का सिद्धांत प्रतिपादित किया तथा ओल्सन की इस कल्पना को निरस्त कर दिया कि सामाजिक आंदोलन स्वहित न्याहने वाले व्यक्तियों से बने होते हैं। इसके स्थान पर तर्क था कि उनका सामाजिक आंदोलनों की सफलता संसाधनों अथवा विभिन्न प्रकार की योग्यता को गतिशील करने की क्षमता पर निर्भर करती है।

यदि एक आंदोलन नेतृत्व, संगठनात्मक क्षमता तथा संचार प्रविधियों जैसे संसाधनों को एकत्र कर सकता है तथा उन्हें उपलब्ध राजनीतिक संरचना में अवसर के आधार पर प्रयोग करके, प्रभावशाली हो सकता है।

20703017

प्रश्न सं० - 37

सामाजिक आंदोलन के "सापेक्षिक वेंचन" के सिद्धांत की व्याख्या करें?

उत्तर- "सापेक्षिक वेंचन" के सिद्धांत के अनुसार सामाजिक संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब एक सामाजिक समूह यह महसूस करता है कि वह अपने आस-पास के अन्य लोगों से खराब स्थिति में है। ऐसा संघर्ष सफल सामूहिक विरोध के रूप में परिणित हो सकता है। यह सिद्धांत सामाजिक आंदोलनों को भड़काने में मनोवैज्ञानिक कारकों जैसे - क्षोभ तथा रोष की भूमिका पर बल देता है।

इस सिद्धांत की सीमा यह है कि हालांकि वेंचन का आभास सामूहिक गतिविधि के लिए एक आवश्यक दशा है फिर भी स्वयं में एक पर्याप्त कारण नहीं है। ऐसी सभी घटनाएँ जहाँ लोग सापेक्षिक वेंचन का अनुभव करते हैं, सामाजिक आंदोलनों में परिणित नहीं होती हैं। सामूहिक कार्यवाही को संगठित करने तथा सतत रूप से गतिशील रखने के लिए शिक्षाओं की चर्चा तथा विश्लेषण आवश्यक है जिनसे एक साझी विचारधारा तथा रणनीति पर पहुँचा जा सके।

प्रश्न सं०-36

सांस्कृतिक आंदोलनों को स्पष्ट करें ?

उत्तर— संस्कृति को यहाँ विचारों, मूल्यों तथा मान्यताओं जो मनुष्य के लिए आवश्यक होते हैं तथा उनके जीवन को आकार देने में मदद करते हैं। इन विचारों तथा मान्यताओं में परिवर्तन प्राकृतिक रूप से सामाजिक जीवन में परिवर्तन को दिखाते हैं। हम निम्नांकित सांस्कृतिक आंदोलनों का वर्णन करेंगे—

- (i) सभी के शिक्षा को अनिवार्य किया जाना, एक प्रगतिगामी कदम है, जिसे सभी ने सहर्ष स्वीकार किया है।
 - (ii) "बाल-श्रम" को दण्डनीय अपराध की श्रेणी में लाया गया है, जो "बचपन बचाओ" मुहिम का परिणाम है।
 - (iii) रंगभेद / नस्लभेद को वैश्विक स्तर पर मानवता के विरुद्ध माना गया है।
 - (iv) भारत सरकार की मुहिम "बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ" कन्याश्रृंखला के विरुद्ध सशक्त आवाज है।
 - (v) "पर्यावरण शिक्षा" को वैश्विक पाठ्यक्रम में जोड़ना, पर्यावरण के प्रति मानवीय उत्तरदायित्व की प्रेरणा से प्रेरित है।
- भारत ही वरन वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक पहलुओं को उठाया गया है, जिसने व्यापक स्तर पर वैचारिक एकता को प्रोत्साहित किया है।

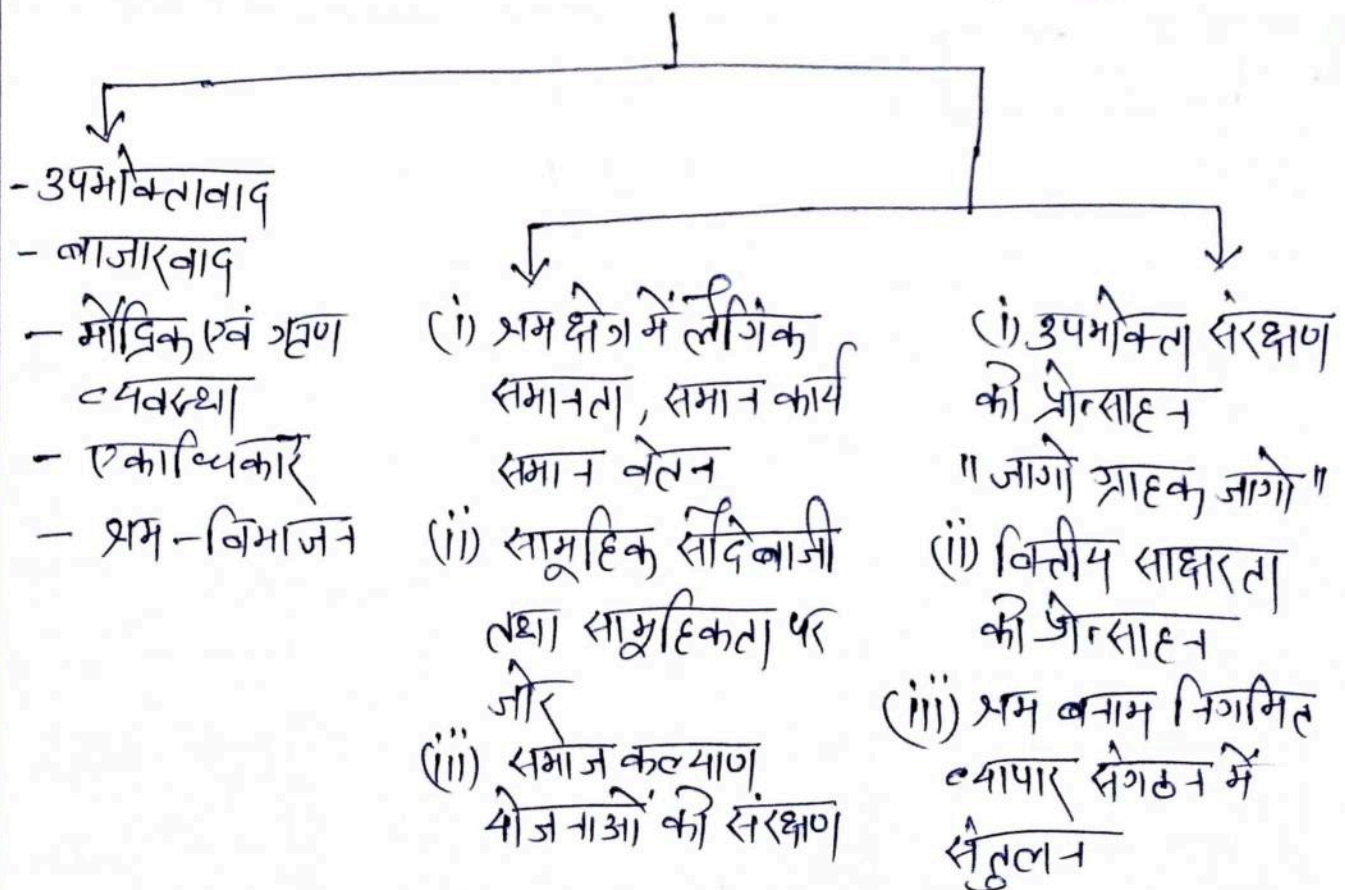
A070301T

प्रश्न सं० - 35

आर्थिक परिवर्तन में सामाजिक आंदोलनों की भूमिका स्पष्ट करें?

उत्तर— आर्थिक संस्थानों हमारे उन निश्चयों से उत्पन्न होती हैं जो हम अपने लिए आवश्यक वस्तुओं के बारे में करते हैं। वे हमारे आर्थिक जीवन को शासित करने वाले मूल विचारों, आदर्श नियमों तथा प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध एवं 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में कारखानों प्रणाली ने पूंजीवाद को जन्म दिया। मशीनों की चालक शक्ति के रूप में वाष्प के प्रयोग ने उद्योगों में क्रांति ला दी।

आर्थिक परिवर्तन में सामाजिक आंदोलन



λ0703017

प्रश्न सं०-34

राजनीतिक परिवर्तन में सामाजिक आंदोलनों की भूमिका को द्रष्टे के?

उत्तर- "राजनीतिक परिवर्तन" राज्य (State) की भावना से प्रभावित है, जो कि निम्न है—

- (i) राज्य का अर्थ, स्वरूप एवं इसकी विशेषताएँ क्या हैं?
- (ii) यह किन क्रियाओं का निष्पादन करता है?
- (iii) मानव व्यवहार को नियमित करने हेतु यह किन साधनों का प्रयोग करता है?

वर्तमान समय में संसदीय लोकतंत्र सर्वव्यापी राजनीतिक पर्याय बन चुका है। "सार्वभौमिक वयस्क मतदाधिकार" के लिए व्यापक वैश्विक स्तर पर आंदोलन हुए—

- (i) चार्टरवाद (चार्टरिज्म) इंग्लैंड में संसदीय प्रतिनिधित्व से संबन्धित एक सामाजिक आंदोलन था।

1918 में 21 वर्ष से अधिक आयु के सभी पुरुषों, 30 वर्ष से अधिक आयु की विवाहिताओं, सहस्रवर्षियों तथा विश्वविद्यालयी स्नातक महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला।

- (ii) "सफ्राजेट्स" (महिला आंदोलनकारियों) ने सभी वयस्क महिलाओं के लिए मतदाधिकार का मामला उठाया।

भारत में सभी वयस्क (18+) महिला/पुरुषों को मत देने का अधिकार भारतीय संविधान द्वारा दिए गए प्रमुख अधिकारों में से एक है।

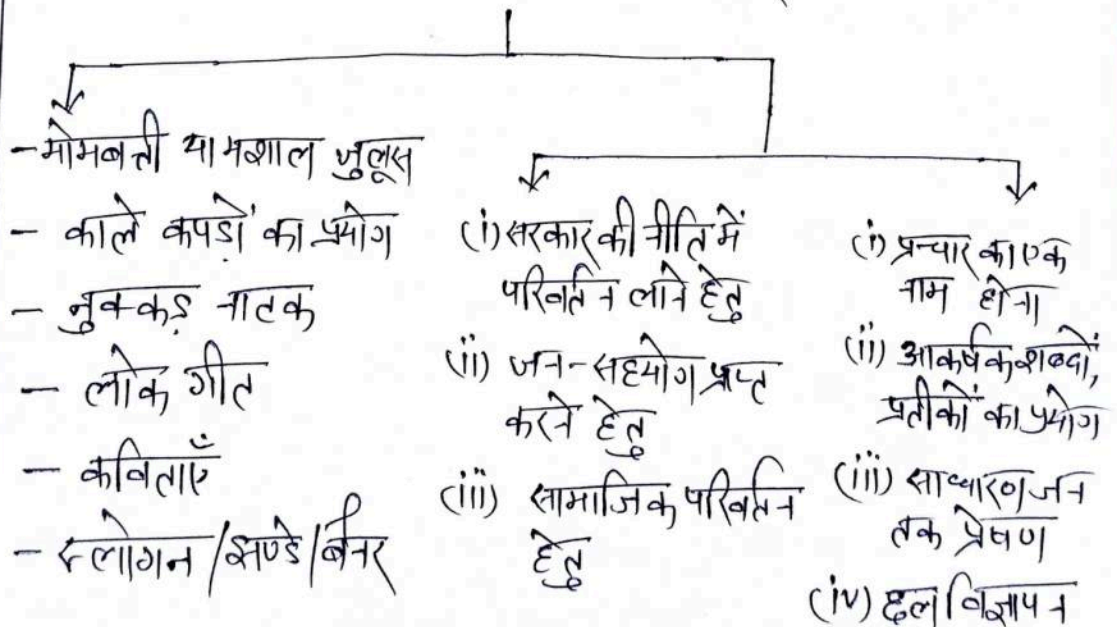
2070301T

प्रश्न सं०-33

सामाजिक आंदोलनों में प्रचार योजनाओं की क्या भूमिका है?

उत्तर- सामाजिक आंदोलन प्रचार योजनाओं का निर्माण भी करते हैं, जिसमें सरकार पर दबाव बनाना, संचार और जनमत तैयार करना शामिल है। सामाजिक आंदोलन विरोध के विभिन्न साधनों को भी विकसित करता है। हमें स्मरण है कि गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन में अहिंसा, सत्याग्रह तथा चरखे के प्रयोग जैसे नए तरीकों को अपनाया। विरोध के नए तरीकों में शांतिपूर्वक चरना तथा नमक के उत्पादन पर औपनिवेशिक प्रतिबंध की अवहेलना शामिल है।

सामाजिक आंदोलनों में प्रचार



Λ0703017

प्रश्न सं०-32

सामाजिक आंदोलन में नेतृत्व का क्या महत्व है, स्पष्ट करें?

उत्तर- नेतृत्व का महत्व (Role of Leadership)

सामाजिक आंदोलनों की सफलता के लिए इसके नेता को आविष्कारी तथा संगठन की प्रभावी होना चाहिए। इसके सदस्यों अथवा समर्थकों की काफी संख्या में भर्ती किया जाना चाहिए, वित्तीय सहायता का प्रबंध हो तथा आंदोलन संबन्धित विभिन्न कार्यों की योजनाबद्ध ढंग से किया जाना चाहिए। कार्यकर्ताओं के महर्ष उचित समन्वय हो। सामाजिक आंदोलनों में नेता का स्थान महत्वपूर्ण है, अधिकांश आंदोलन नेतृत्व के अभाव में असफल हो जाते हैं।

प्रभावी नेतृत्व के प्रमुख गुण निम्न हैं—

- (i) संगठनकर्ता
- (ii) लक्ष्य केन्द्रित कार्यप्रणाली
- (iii) प्रभावी सम्बोधनकर्ता
- (iv) सदस्यों में उत्साह का सैन्यार
- (v) कुशल समन्वयकर्ता
- (vi) तनाव प्रबोधन
- (vii) प्रत्येक सदस्य को अपने विचार अभिव्यक्त करने का अवसर देना।

A070301T

प्रश्न सं०-31

सामाजिक आंदोलनों के प्रकारों का उल्लेख करें?

उत्तर- सामाजिक आंदोलनों का वर्गीकरण करना सरल नहीं है, क्योंकि कभी-कभी आंदोलन मिश्रित प्रकार का होता है अथवा विभिन्न-धरणों में विभिन्न प्रकार का हो सकता है। तथापि इनको निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है—

- (i) प्रवासी आंदोलन — मधुदियो का आंदोलन
- (ii) प्रदर्शनकारी आंदोलन — हिप्पी आंदोलन
- (iii) काल्पनिक आंदोलन — सर्वोदय आंदोलन
- (iv) सुधार आंदोलन — दहेज प्रथा का उद्घरण आंदोलन
- (v) क्रान्तिकारी आंदोलन — सोवियत रूसी क्रान्ति
- (vi) प्रतिरोधक आंदोलन — हिन्दी भाषा के विरुद्ध D.M.K. आंदोलन (भाषावाद)

कुछ आंदोलनों का उद्देश्य वर्तमान व्यवस्था के कुछेक पहलुओं को बदलना होता है, जबकि अन्य आंदोलनों का उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था में आमूल-मूल परिवर्तन लाना है।

A0703011

प्रश्न सं०-30

सामाजिक आंदोलनों के प्रमुख कारणों को स्पष्ट करें ?

उत्तर- सामाजिक आंदोलन अकारण व्यक्त नहीं होते हैं। सामाजिक बेचैनी सामाजिक आंदोलनों को जन्म देती है। सामाजिक आंदोलनों के उत्पन्न होने के निम्नलिखित कारण होते हैं—

(i) सांस्कृतिक विस्थापन	बेचैनी	↑ अधिकार सामाजिक आंदोलन इन्हीं चार अवस्थाओं से गुजरते हैं।
(ii) सामाजिक विव्यतन	उत्तेजना	
(iii) सामाजिक अन्याय	औपचारिकरण	
	संस्थापकीकरण	

स्थिर, सुगठित समाजों में आंदोलन कम होते हैं। ऐसे समाजों में सामाजिक तनाव अथवा विविध विद्रुह विव्यतित समूह कम होते हैं। लोग संतुष्ट होते हैं। परंतु परिवर्तनशील एवं निरंतर विव्यतित समाज में लोग तनावों से पीड़ित होते हैं। ऐसे समाजों में लोग अन्याय महसूस करते हैं एवं असंतुष्ट हो जाते हैं। असंतुष्ट लोग ही सामाजिक आंदोलनों का निर्माण करते हैं।

20703017

प्रश्न सं० - 29

सामाजिक आंदोलन का अर्थ स्पष्ट करें?

उत्तर- समाज में अनेक परिवर्तन लोगों द्वारा व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप में प्रयत्नों द्वारा लाये गये हैं। ऐसे प्रयत्नों को सामाजिक आंदोलन की संज्ञा दी जाती है। अतः सामाजिक आंदोलन की परिभाषा करते हुए कहा जा सकता है कि "यह एक समग्रता है जो समाज अथवा समूह, जिस का यह अंग है, में परिवर्तन लाने अथवा रोकने के लिए कुछ निरंतरता से कार्य कर रहा है।" सामाजिक आंदोलन विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं, यथा धार्मिक आंदोलन, सुधार आंदोलन, क्रांतिकारी आंदोलन, राजनीतिक आंदोलन आदि।

सामाजिक आंदोलन की निम्न विशेषताये हैं—

- (i) यह किसी समूह द्वारा प्रयत्न है,
- (ii) इसका लक्ष्य समाज में परिवर्तन लाना या उसका विरोध करना होता है,
- (iii) यह संगठित अथवा असंगठित दोनों प्रकार का हो सकता है,
- (iv) यह शांतिपूर्ण अथवा हिंसात्मक हो सकता है,
- (v) इसका जीवन काल अनिश्चित होता है। यह दीर्घकालिक हो सकता है अथवा अल्पकालिक भी हो सकता है।

A070301T

प्रश्न सं०-28

वैश्वीकरण की प्रक्रिया की व्याख्या करें?

उत्तर- वैश्वीकरण (Globalisation) पूँजी, भ्रम, प्रौद्योगिकी वस्तुओं और ज्ञान का राष्ट्रीय सीमाओं के आर-पार निर्विघ्न संचरण है। यह आर्थिक संघर्ष के उद्देश्यों से दुनियाँ के देशों और व्यक्तियों के मध्य एकीकरण और अन्तर्क्रिया की प्रक्रिया है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया को घातात एवं संचार प्रणाली की उच्च प्रौद्योगिकी (टेलीफोन, कम्प्यूटर तथा इंटरनेट) ने सुगम बनाया है।

वैश्वीकरण को बढ़ाने वाले प्रमुख प्रेरक हैं-

- (i) बाजार की खोज
- (ii) बहुराष्ट्रीय निवेश
- (iii) प्रौद्योगिकी, वैज्ञानिक के नए उपकरण और कम्प्यूटर से जुड़ा विश्व सूचना संकुल।

वैश्वीकरण विश्व स्तर पर क्रियाशील एक ऐसी प्रक्रिया है जो समय और स्थान की सीमाओं को तोड़ते हुए समुदायों और संगठनों को अन्त्यो-यामितता और अन्तर्परस्परिकता के संबंधों में बाध्य करती है। यह वैश्विक स्तर पर आंदोलन एवं व्युत्पन्न-मिलन, सम्पर्क और अनुबंधों तथा दृष्टि अन्तर्क्रिया और आदान-प्रदान की प्रक्रिया है।

A0703017

प्रश्न सं०-27

व्यभिचारेक्षण (लौकिकीकरण) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- "मानवीय कार्यों में व्यभिचारेक्षण की भूमिका के संबंध में तार्किक भाव द्वारा स्थान ग्रहण करना अर्थात् व्याभिचारेक्षण विचारों तथा क्रियाओं का स्थान गैर-व्याभिचारेक्षण विचारों और क्रियाओं द्वारा लेना ही व्यभिचारेक्षण है"।

व्यभिचारेक्षण सिद्धांत में दो अर्थ प्रमुख हैं—

- (i) परम्परागत रूप में व्यभिचारेक्षण की सक्रिय रूप से स्वीकार करना
- (ii) दैनिक जीवन में व्याभिचारेक्षण नियंत्रण कम होना, व्याभिचारेक्षण सिद्धांत के प्रति विरोध बढ़ना तथा सांस्कृतिक क्रियाओं का स्थान तार्किक क्रियाओं द्वारा लेना।

व्यभिचारेक्षण को प्रभावित करने वाले कारक निम्न हैं—

- (i) पश्चिमीकरण
- (ii) शरीकरण एवं औद्योगिकीकरण
- (iii) मातापिता एवं संस्कार साधनों की तीव्रगामी विकास
- (iv) आधुनिक शिक्षा प्रणाली
- (v) व्याभिचारेक्षण एवं सामाजिक सुधार आंदोलन

A0703017

प्रश्न सं०-26

आधुनिकीकरण से आप क्या समझते हैं, स्पष्ट करें?

उत्तर- आधुनिकीकरण शब्द का एक लम्बा इतिहास है। 19वीं शताब्दी से और विशेषकर 20वीं शताब्दी के दौरान, इस शब्द को सकारात्मक और बांछनीय मूल्यों से जोड़कर समझा जाने लगा। प्रत्येक समाज और उसके लोग आधुनिक बनना चाहते थे। प्रारम्भिक वर्षों में आधुनिकीकरण का आशय प्रौद्योगिकी और उत्पादन प्रक्रियाओं में होने वाले सुधार से था।

"आधुनिकता" का अर्थ यह समय में आता है कि इसके समक्ष "सीमित-संकीर्ण-स्थानीय दृष्टिकोण" कमजोर पड़ जाते हैं और सार्वभौमिक-प्रतिबद्धता और वैश्विक दृष्टिकोण ज्यादा प्रभावशाली होता है। इसमें उपयोगिता, गणना और विज्ञान की सत्यता को भावुकता, धार्मिक पवित्रता और अद्वैतानिक तत्वों के स्थान पर महत्व दिया जाता है।

2070301T

प्रश्न सं०-२९

पश्चिमीकरण विचारधारा से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- एम० एन० श्रीनिवास ने पश्चिमीकरण की परिभाषा देते हुए कहा कि यह भारतीय समाज और संस्कृति में, लगभग 150 वर्षों के ब्रिटिश शासन के परिणामस्वरूप आए परिवर्तन हैं, जिसमें विभिन्न पहलू शामिल हैं, जैसे- प्रौद्योगिकी, शिक्षा, विचारधारा और मूल्य।

पश्चिमीकरण का मतलब उस पश्चिमी उप सांस्कृतिक प्रतिमान से है जिसे भारतीयों के उस छोटे समूह ने अपनाया जो पहले पश्चिमी संस्कृति के संपर्क में आए हैं। इसमें भारतीय बुद्धिजीवियों की उप संस्कृति भी शामिल थी इन्होंने न केवल पश्चिमी प्रतिमान चिंतन के प्रकारों, स्वरूपों एवं जीवनशैली को स्वीकारा बल्कि इनका समर्थन एवं विस्तार भी किया।

हम पाते हैं कि पूरे देश में मध्य वर्गीय एक बहुत बड़े हिस्से के परिवारों में टेलीविजन, फ्रिज, सोफा सेट, खाने की मेज और उठने-बैठने के कमरों में कुर्सी आदि आम बात हैं।

λ0703017

प्रश्न सं०-24

संस्कृतिकरण की स्पष्ट व्याख्या करें?

उत्तर- "संस्कृतिकरण" शब्द की उत्पत्ति एम०एन० श्रीनिवास ने की है। संस्कृतिकरण का अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जिसमें निम्न जाति या जनजाति या अन्य समूह उच्च जातियों विशेषकर हिज जाति की जीवन पद्धति, अनुष्ठान, मूल्य, आदर्श, विचारधाराओं का अनुसरण करते हैं। संस्कृतिकरण के बहुआयामी प्रभाव हैं। इसके प्रभाव भाषा, साहित्य, विचारधारा, कला, संगीत, हस्त, नाटक, अनुष्ठान व जीवन पद्धति में देखे जा सकते हैं।

- (i) संस्कृतिकरण सामाजिक गतिशीलता की एक प्रक्रिया है।
- (ii) इसमें निम्न जातियों द्वारा उच्च जातियों का अनुसरण किया जाता है।
- (iii) यह वैयक्तिक प्रक्रिया न होकर एक सामुदायिक प्रक्रिया है।
- (iv) यह सर्वव्यापी प्रक्रिया भी है।
- (v) संस्कृतिकरण केवल हिन्दू जातियों तक सीमित नहीं, यह अन्य जातियों में भी पाया जाता है।
- (vi) संस्कृतिकरण से केवल पदमूलक परिवर्तन होते हैं, संस्चनात्मक नहीं।
- (vii) संस्कृतिकरण के विभिन्न आदर्श प्रतिमान हैं।

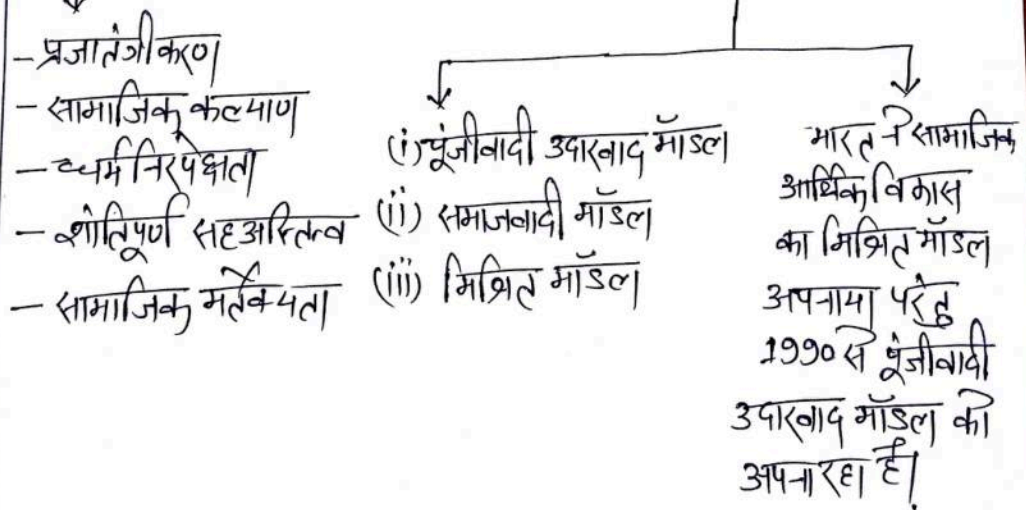
A070301T

प्रश्न सं०-23

विकास (Development) से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- विकास (Development) परिवर्तन की एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक देश के अधिकाधिक नागरिक उच्च भौतिक, रहन-सहन के स्तर, स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन प्राप्त करने के साथ-साथ अधिकाधिक मात्रा में शिक्षित होने का प्रयास करते हैं। सामाजिक जीवन में गुणात्मक सुधार तथा मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति को सामाजिक विकास कहते हैं।

विकास (Development)



A070301T

प्रश्न सं०-22

बुद्धि (Dravayam) से आप क्या समझते हैं, स्पष्ट करें?

उत्तर- बुद्धि (Dravayam) जब किसी वस्तु में परिमाणान्तरिक परिवर्तन होता है तब हम उसे बुद्धि कहते हैं। वैसे प्रकार बुद्धि में भी परिवर्तन की दिशा स्पष्ट होती है। बुद्धि आकार में होने वाले परिवर्तन को सूचित करता है।

बुद्धि (Dravayam)

मानवीय एवं जैविक, स्थूल एवं गतिमान सभी विषयों में बुद्धि एक अनुपात में होती है। जिसे मापन द्वारा समझा जाता है।

↓
- शारीरिक
- शैक्षिक
- व्यावसायिक
- प्रशिक्षण
- प्रतिस्पर्धा

↓
- मापन के आँकड़े
- भ्रष्ट/सर्वोत्तम/
सामान्य/संतोषप्रद
जैसी वर्गीकृत
व्याख्या करते हैं।
जो बुद्धि की गणना
में महत्वपूर्ण है।

समाज में हमेशा सकारात्मकता रही है और समाज में हमेशा वर्गीकरण रहा है। जब समाज होता है तो मापन के आँकड़े हैं जो प्रदर्शन या परीक्षण के आधार पर बुद्धि को मापते हैं।

A0703017

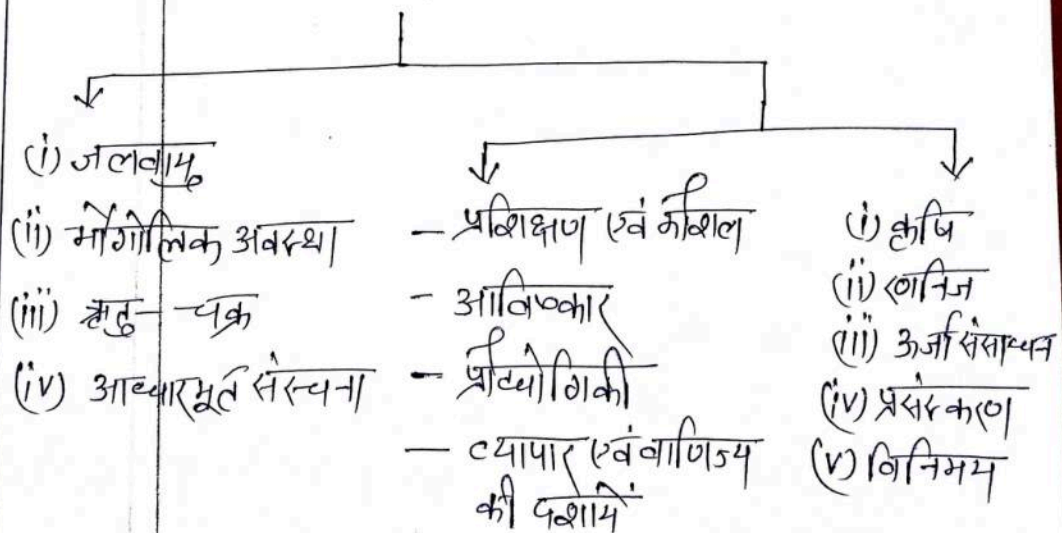
प्रश्न सं० - 21

अनुकूलन (Adaptation) से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- आगबनी के अनुसार परिवर्तन की एक प्रक्रिया अनुकूलन भी है। अनुकूलन में एक व्यक्ति अपने पर्यावरण के साथ समायोजन करने का प्रयत्न करता है। इसलिए अनुकूलन की प्रक्रिया दो बातों की ओर संकेत करती है—

- (i) व्यक्ति अपने को परिस्थितियों के अनुसार ढाल ले,
- (ii) पर्यावरण व परिस्थितियों को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार संशोधित कर ले।

अनुकूलन (Adaptation)



A0703017

प्रश्न सं०-20

क्रांति (Revolution) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर— क्रांति (Revolution) परिवर्तन की तीव्रता एवं आकास्मिकता को प्रकट करती है। इसमें परिवर्तन का क्रम टूट जाता है और एक एक परिवर्तन प्रकट होता है अर्थात् अचानक होने वाला परिवर्तन जिसमें कोई क्रम न हो, क्रांति कहलाता है।

क्रांति (Revolution)

(i) हिंसात्मक स्वरूप

(ii) अहिंसात्मक स्वरूप

महात्मा गांधी का
"सत्य एवं अहिंसा"
का प्रयोग "सत्याग्रह"

- विध्वंसन

- आर्थिक असुरक्षा

- सत्ता परिवर्तन

- पारिवारिक परिवर्तन

- अपराधों में वृद्धि

- जन-व्यय की दानि

फ्रांसीसी क्रांति ने
- 1789

(i) धर्म

(ii) राज्य

(iii) समाज

तीनों स्तरों में

परिवर्तन कर

दिया।

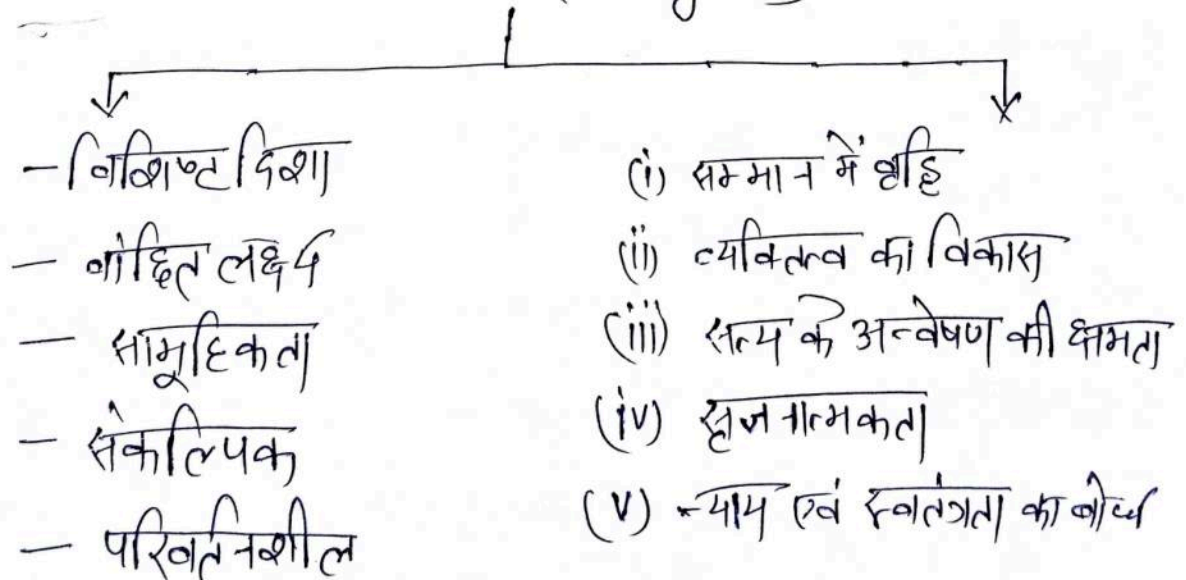
A0703017

प्रश्न सं०-19

प्रगति की अवधारणा (The Idea of Progress) का वर्णन करें?

उत्तर— प्रगति (Progress) हमेशा अच्छाई की ओर होने वाले परिवर्तन को कहा जाता है। ऐसा परिवर्तन जो हमारी रूढ़ियों एवं लक्ष्यों के अनुरूप हो प्रगति के नाम से जाना जाता है। प्रगति का सम्बन्ध सामाजिक श्रेणियों और आदर्शों से है। अर्थात् समाज जिन लक्ष्यों को आदर्श एवं वांछित मानता है उसी दिशा में होने वाले परिवर्तन को प्रगति कहा जाता है। प्रगति का सम्बन्ध रैतिकता से है और प्रगति की माप सम्भव होती है।

प्रगति (Progress)



A0703017

प्रश्न सं०-18

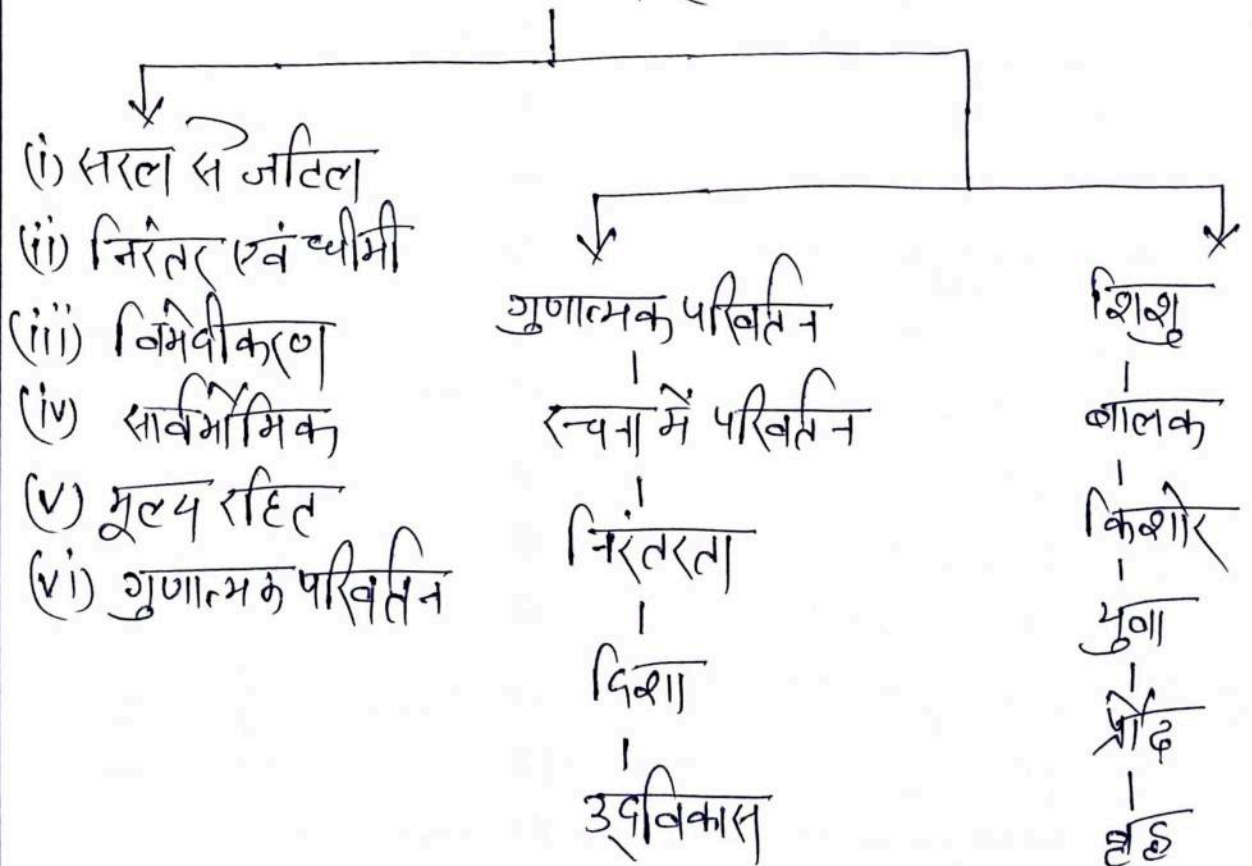
उत्प्रेक्षा (Evolution) की विशेषताओं का उल्लेख करें?

उत्तर— अंग्रेजी भाषा का शब्द "Evolution" लैटिन शब्द "Evolvere" से बना है जिसका अर्थ है "विकसित होना"

To Develop अथवा "प्रकट करना" To Unfold है।

उत्प्रेक्षा में कुछ अव्यक्त आंतरिक भाव निहित है, केवल आकार सम्बन्धी परिवर्तन ही नहीं, अपितु संरचना सम्बन्धी भी।
उत्प्रेक्षा विभेदीकरण एवं समेकन की निरंतर प्रक्रिया है।

उत्प्रेक्षा (Evolution)



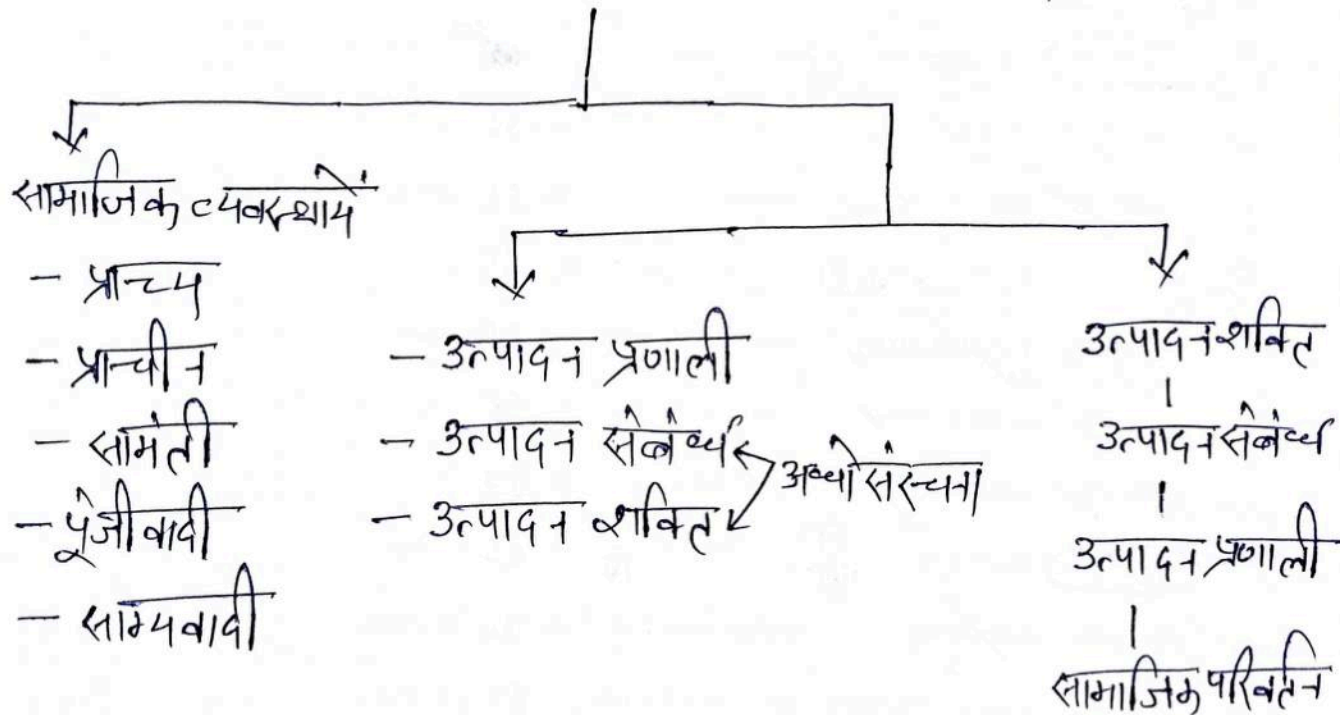
A0703017

प्रश्न सं०-17

कार्ल मार्क्स के द्वारा प्रस्तुत सामाजिक परिवर्तन के दृष्टांत की व्याख्या करें?

उत्तर- जर्मन दार्शनिक हीगल (Hegel) के परामर्शिक आदर्शवाद से प्रभावित होकर कार्ल मार्क्स ने कहा है कि जीवन की भौतिक अवस्थाएँ ही सामाजिक परिवर्तन के निश्चयात्मक कारण हैं। इस सिद्धांत को आर्थिक निष्पत्तिवाद अथवा इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या का सिद्धांत भी कहते हैं।

कार्ल मार्क्स का "आर्थिक निष्पत्तिवाद"



किसी भी अवस्था में वाद, प्रतिवाद, सेवाद, तीनों कारक कार्य करते हैं। इस प्रकार प्रत्येक अवस्था में आंतरिक संघर्ष होता है और इसी आंतरिक संघर्ष से परिवर्तन होता है।

A0703017

प्रश्न सं०-16

हुअर - यैपिन के समकालिक-चक्रीय परिवर्तन सिद्धांत की व्याख्या करें?

उत्तर- हुअर - यैपिन ने संग्रह की अवधारणा को सामाजिक परिवर्तन के अपने सिद्धांत का आधार बनाया है। यैपिन के अनुसार, सांस्कृतिक परिवर्तन समय की दृष्टि से चयित रूप में संग्रहात्मक (Selectively accumulative in time) होता है।

यैपिन ने लिखा, "सांस्कृतिक परिवर्तन की अवधारणा का सर्वाधिक आवागम्य उपागम परिवर्तन की प्रक्रिया को समय की दृष्टि से चयित रूप में संग्रहात्मक एवं स्वरूप में चक्रीय अथवा प्रदीपकीय समझना होगा।"

यैपिन के अनुसार, सांस्कृतिक परिवर्तन चयित रूप में संग्रहात्मक तथा स्वरूप में चक्रीय दोनों हैं। यैपिन ने समकालिक-चक्रीय परिवर्तन (Sympochronological Change) की कल्पना का प्रतिपादन किया। यैपिन के अनुसार, विकास एवं पतन का चक्र सांस्कृतिक स्वरूपों पर उतना ही अपरिहार्य है जितना जीवित वस्तुओं के लिए।

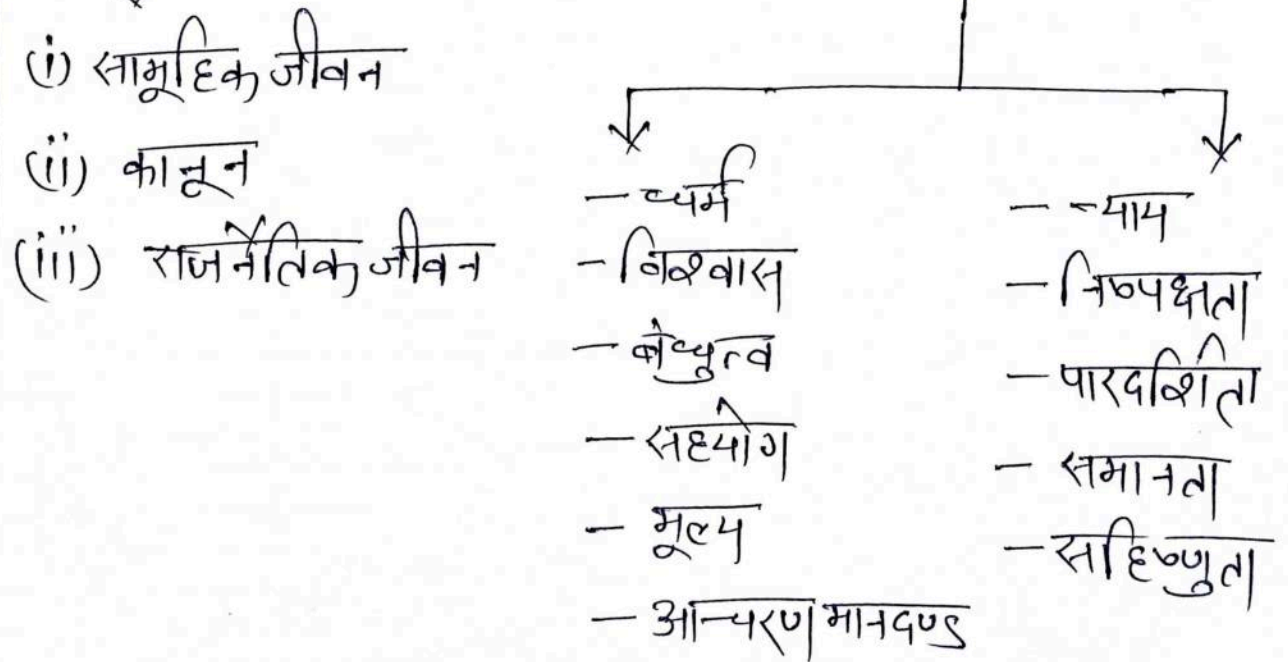
A0703017

प्रश्न सं०-15

एल० टी० हॉबहाउस के "नैतिक आदर्श सिद्धांत" का वर्णन करें?

उत्तर— एल० टी० हॉबहाउस के सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत को मनोवैज्ञानिक या नैतिक आदर्शों का सिद्धांत कहा जाता है। उन्होंने बताया कि समाज में जैसा आदर्श नियम होता है, वैसा ही मनुष्य व्यवहार करता है। हॉबहाउस ने सामाजिक परिवर्तन को निम्नवत् रूपों में प्रस्तुत किया है—

हॉबहाउस का "नैतिक आदर्श सिद्धांत"



A0703017

प्रश्न सं०-14

मी० वेबलन के प्राव्योगिकी निर्णयवाद सिद्धांत की व्याख्या करें?

उत्तर— वेबलन के सिद्धांत को प्राव्योगिकी निर्णयवाद कहा जाता है। वेबलन ने प्राव्योगिकी को सामाजिक परिवर्तन हेतु उत्तरदायी माना है। वेबलन ने दो प्रकार की मानवीय विशेषताओं का उल्लेख किया है—

वेबलन का "प्राव्योगिकी निर्णयवाद"

(नार्वे के बड़े परिवार) विशेष अध्ययन)

↓
स्थिर विशेषतायें
— इसका संबंध मनुष्य की श्रम प्रवृत्तियों व प्रेरणाओं से होता है जिनमें बहुत ही कम परिवर्तन होता है।

↓
परिवर्तनशील विशेषतायें
— वेबलन की मान्यता है कि जब भौतिक पर्यावरण विशेषकर प्राव्योगिकी में परिवर्तन आता है तो मनुष्य की आदत एवं विचारों में भी परिवर्तन आ जाता है। ये परिवर्तन सामाजिक संबंधों एवं संस्थाओं को प्रभावित करते हैं जिससे सामाजिक संरचना में परिवर्तन आ जाता है।

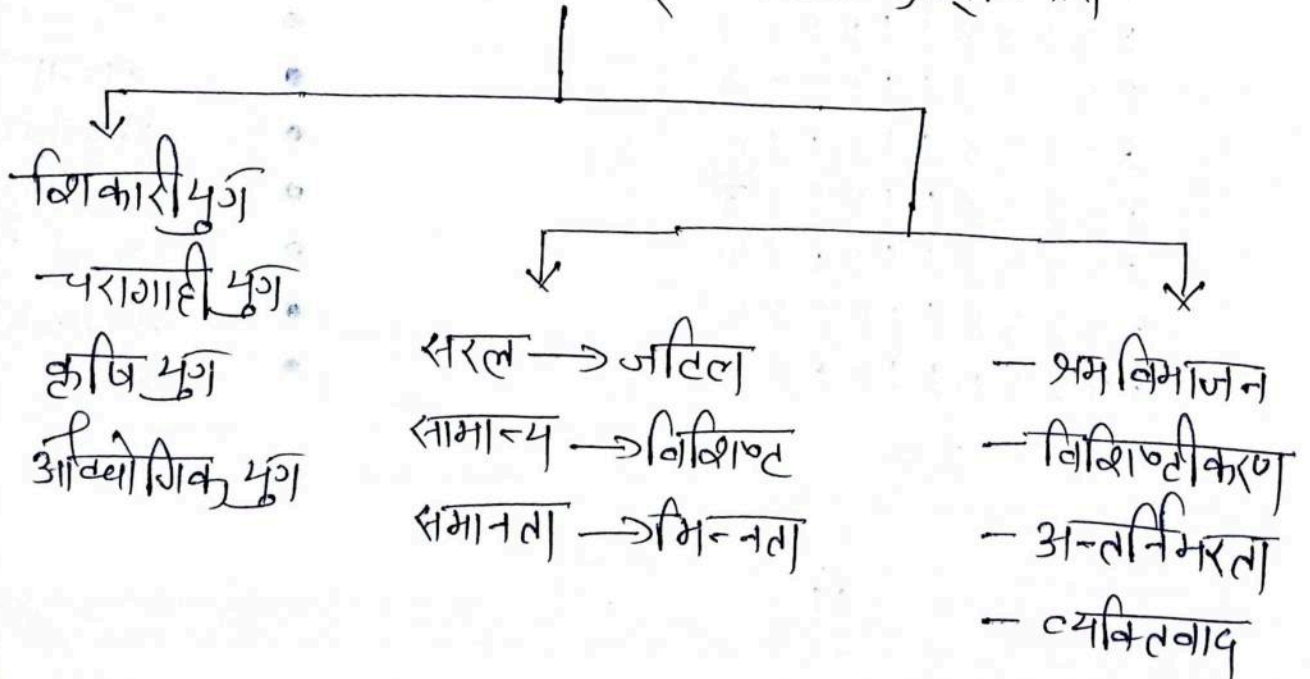
20703011

प्रश्न सं०-13

हर्बर्ट स्पेंसर के सामाजिक उद्‌विकास का वर्णन करें ?

उत्तर- स्पेंसर ने समाज को जीव के समान बतलाया है। मानव समाज धीरे-धीरे श्रेष्ठतर अवस्था की ओर बढ़ रहा है। आदिम अवस्था में सैन्यवाद की प्रवृत्तता थी। मनुष्य युद्धरत समूहों में विभक्त था, मनुष्य का जीवन संघर्षरत था। सैन्यवाद से समाज उद्योगवाद की अवस्था की ओर बढ़ा। उद्योगवाद की अवस्था में समाज अपने अंगों के अत्यधिक विभेदीकृत एवं एकीकृत संतुलन में विकास कर रहा है। समाज सदा प्रगति की ओर बढ़ता है।

हर्बर्ट स्पेंसर " सामाजिक उद्‌विकास "



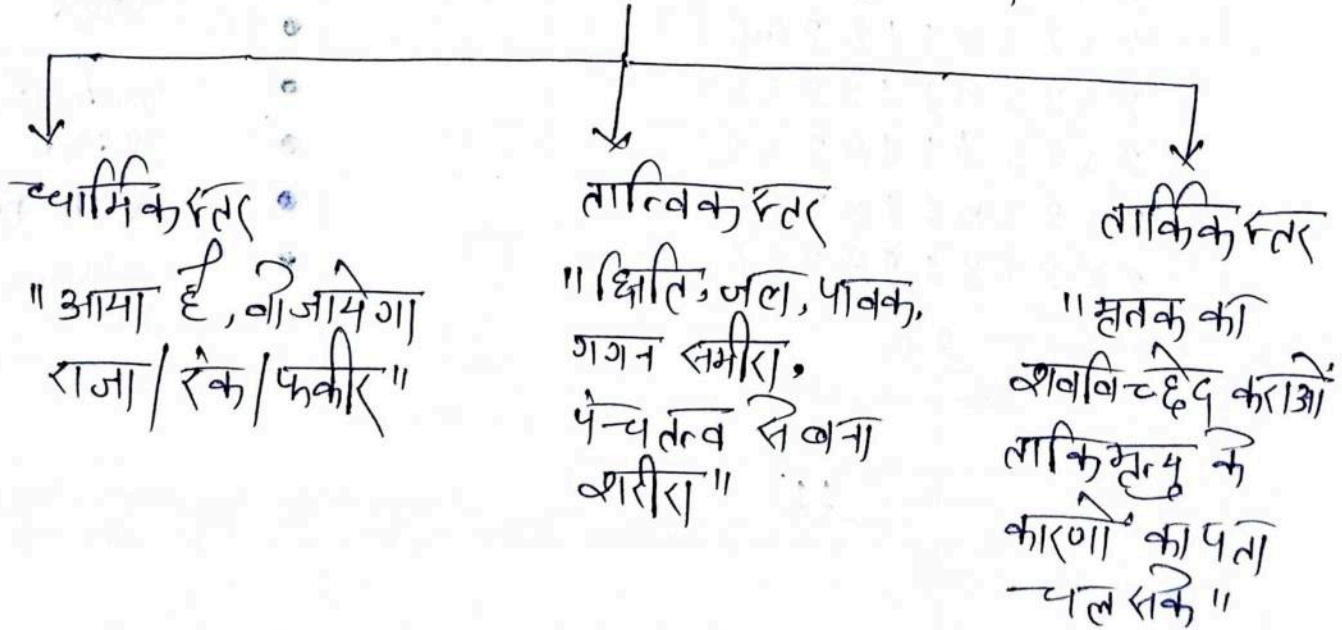
20703017

प्रश्न सं०-12

अग्रस्त कॉमन्स के सामाजिक परिवर्तन के बौद्धिक विकास सिद्धांत का वर्णन करें ?

उत्तर— अग्रस्त कॉमन्स ने सामाजिक परिवर्तन के बौद्धिक विकास सिद्धांत को सामाजिक पुनर्गठन का आव्यूह माना है। मनुष्य में तार्किक चेतना का विकास कई चरणों से गुजरने के बाद हुआ है। मनुष्य ने पहले प्रकृति की उपासना की, इसके बाद बहुदेववाद अस्तित्व में, इसके बाद अहिंद की अवस्था आयी। कॉमन्स ने बौद्धिक विकास तथा सामाजिक परिवर्तन के तीन स्तर माने हैं। किसी व्यक्ति की मूल्य देने पर मनुष्य किस प्रकार प्रतिक्रिया देता है, यह उदाहरण स्वरूप वर्णित है—

अग्रस्त कॉमन्स " बौद्धिक विकास "



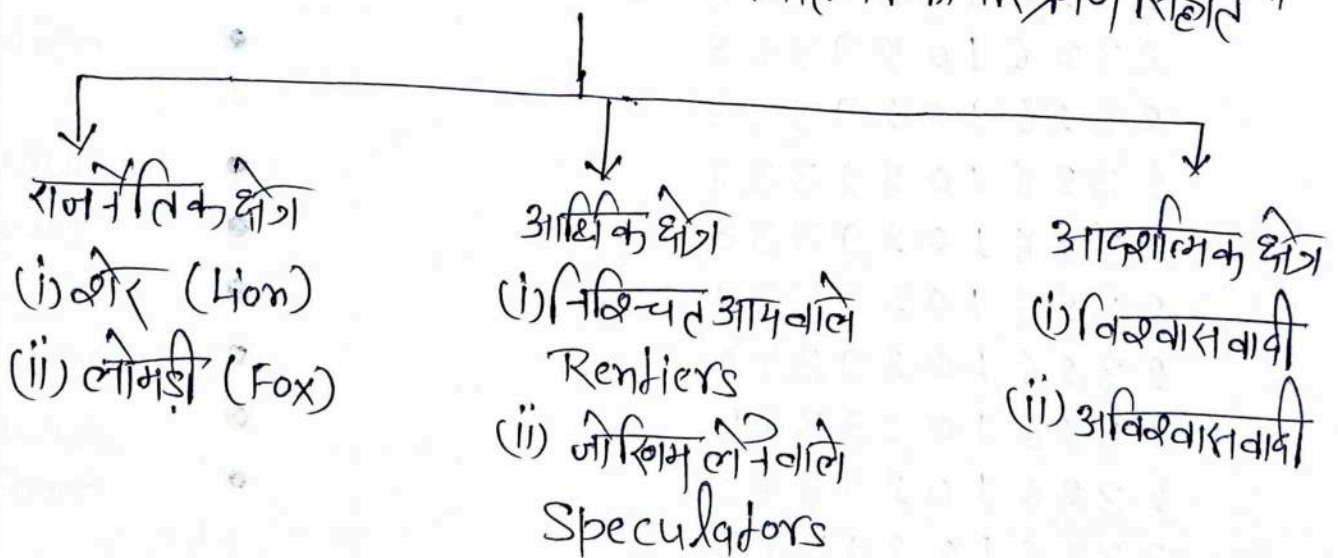
A070301T

प्रश्न सं०-11

विल्फ्रेड पैरेटो के "अभिजात वर्ग का परिभ्रमण" सिद्धांत का वर्णन करें?

उत्तर— विल्फ्रेड पैरेटो ने अपनी पुस्तक "Mind and Society" में सामाजिक परिवर्तन के "अभिजात वर्ग का परिभ्रमण" का सिद्धांत प्रस्तुत किया है। पैरेटो का विचार है कि प्रत्येक समाज की संरचना का ऊपरी भाग अभिजात वर्ग/उच्च वर्ग का होता है, जबकि सबसे नीचे के पायदान पर रहने वाला वर्ग निम्न वर्ग कहा जा सकता है। पैरेटो के अनुसार यह चक्रीय परिवर्तन राजनैतिक, आर्थिक, आद्वैत्मिक आदि सभी क्षेत्रों में देखने को मिलता है।

विल्फ्रेड पैरेटो का "अभिजात वर्ग का परिभ्रमण सिद्धांत"

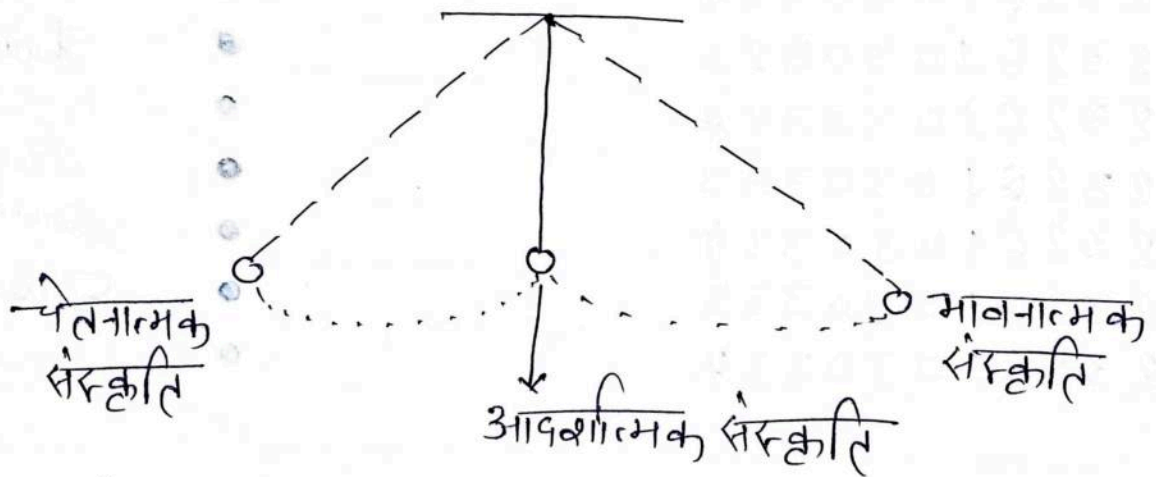


A0703017

प्रश्न सं०-10

पी० सोरोकिन का सांस्कृतिक गतिशीलता के सिद्धांत का वर्णन कीजिए।
उत्तर— पी० सोरोकिन ने सांस्कृतिक गतिशीलता या उतार-चढ़ाव का सिद्धांत अपनी पुस्तक "Social and Cultural Dynamics" में प्रस्तुत किया है। सोरोकिन ने परिवर्तन के चक्रीय सिद्धांत के स्पेंगलर के विचारों का विरोध किया है और बताया है कि परिवर्तन चक्र में न होकर एक "पेण्डुलम" के समान होता है।

पी० सोरोकिन (पेण्डुलम सिद्धांत)



- (i) चेतनात्मक संस्कृति "भौतिकवादी संस्कृति"
- (ii) भावनात्मक संस्कृति "नैतिक मूल्य एवं विश्वासों से ओत-प्रोत"
- (iii) आध्यात्मिक संस्कृति— यह ऊपर वर्णित दोनों संस्कृतियों के मध्य की अवस्था है जो व्यक्तिगत लाभ के साथ ही मानवीय मूल्यों को भी महत्व देती है।

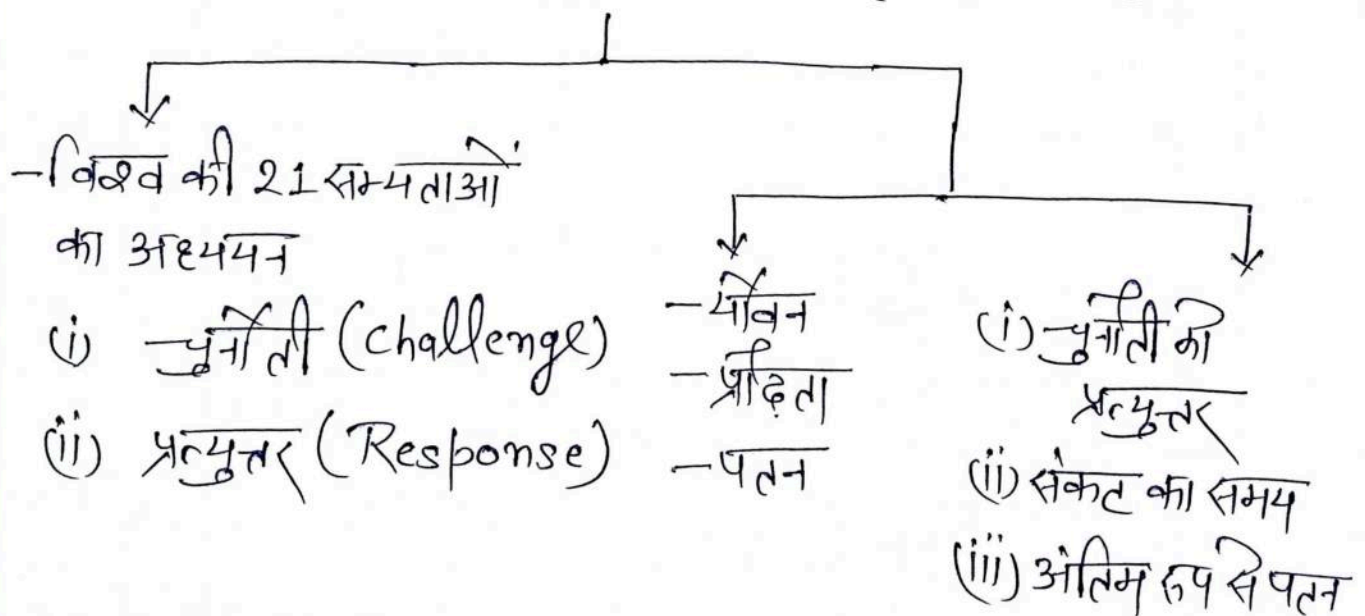
A0703017

प्रश्न सं०-9

अर्नेल्ड टायनबी का सामाजिक परिवर्तन सिद्धांत क्या है?

उत्तर— अर्नेल्ड टायनबी एक विख्यात अंग्रेज दार्शनिक थे, जिन्होंने विश्व सभ्यता के इतिहास का चक्रिक सिद्धांत प्रतिपादित किया है। टायनबी ने अपनी पुस्तक "A Study of History" में "चुनौती तथा प्रत्युत्तर" का सिद्धांत दिया है। उन्होंने बताया कि प्रत्येक सभ्यता की प्रकृति एवं मानव द्वारा चुनौती दी जाती है, जो सभ्यताएं इसका प्रत्युत्तर निर्माण के रूप में देती हैं वही जीवित रहती हैं, शेष नष्ट हो जाती हैं।

अर्नेल्ड टायनबी (चक्रिक सिद्धांत)



टायनबी के अनुसार प्रत्येक समाज निर्माण एवं विनाश, संगठन एवं विघटन के दौर से गुजरता है। सिन्धु, नील, दजला-फरात, गंगा, वोल्गा आदि नदी घाटी सभ्यताएँ इस का प्रमाण हैं।

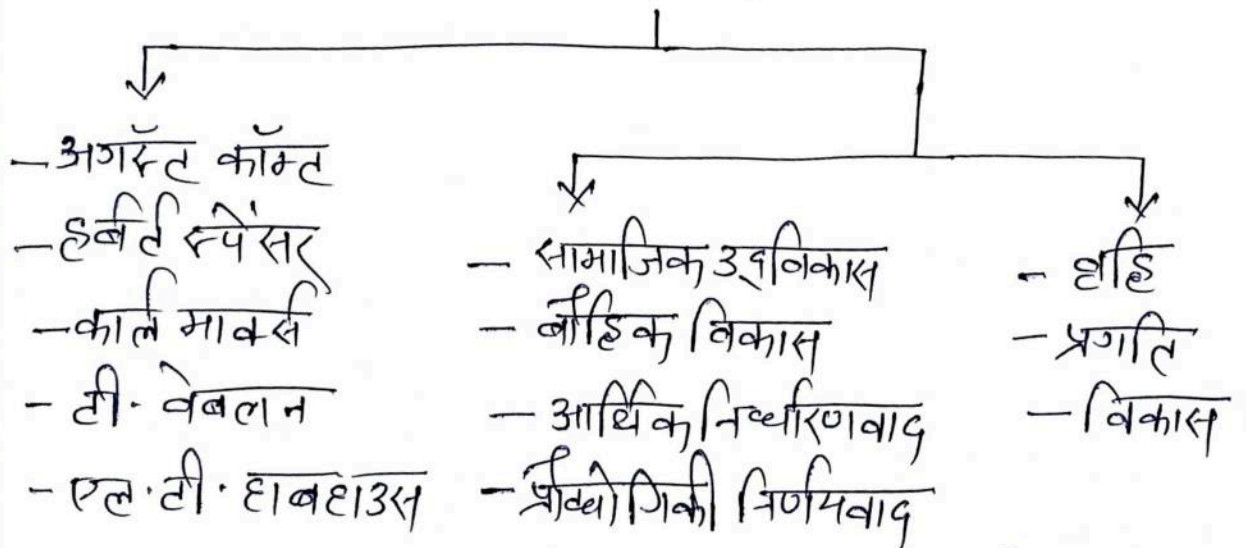
A0703017

प्रश्न सं०-8

रेखीय परिवर्तन (Linear theory) से आप क्या समझते हैं?

उत्तर— रेखीय परिवर्तन के अनुसार, समाज धीरे-2 सम्यता की उच्च से उच्चतर अवस्था की ओर बढ़ता जाता है तथा यह सर्वव्यवस्था की दिशा में अग्रसर होता है। यह जहाँ से प्रारम्भ होता है, वहीं से आगे बढ़ता है, पीछे लौट कर उस स्थान की कभी नहीं आता है।

रेखीय परिवर्तन



रेखीय परिवर्तन में क्रमबद्धता पायी जाती है, क्योंकि एक चरण, दूसरे चरण से जुड़ा रहता है। शारीरिक विकास अवस्था क्रम को हम रेखीय परिवर्तन का उदाहरण मान सकते हैं।

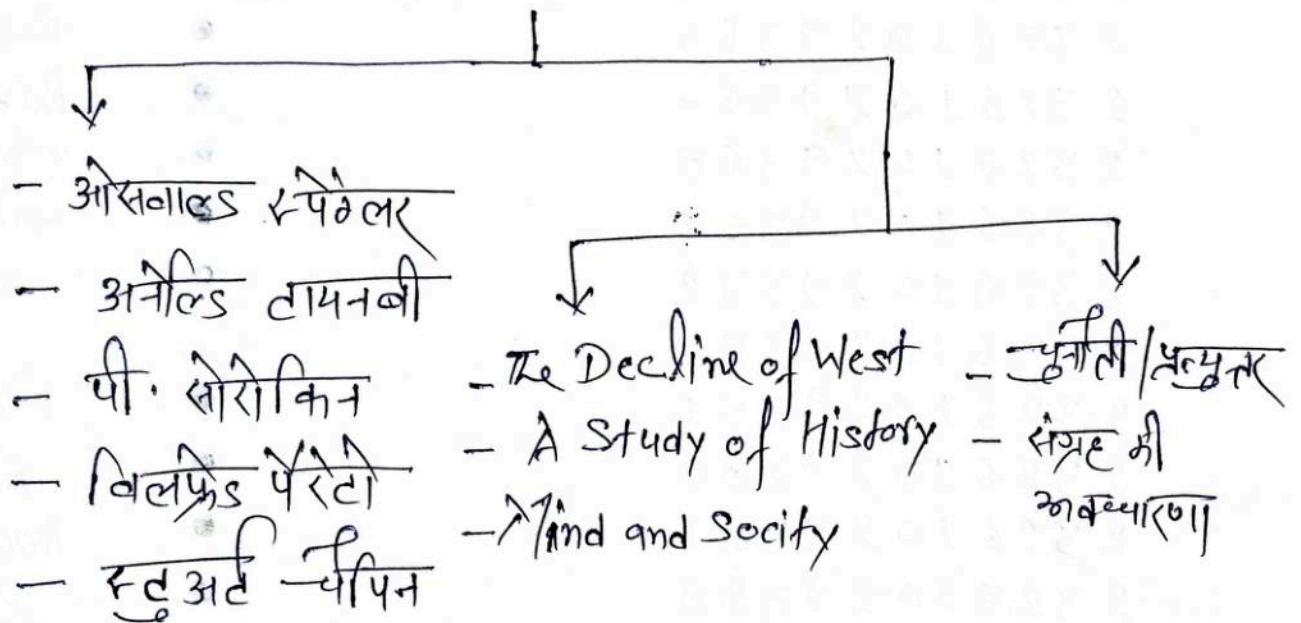
20703017

प्रश्न सं०-7

चक्रीय परिवर्तन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- चक्रीय परिवर्तन (Cyclic theory) के अनुसार मानव समाज कुछेक चक्रों से गुजरता है। इस परिवर्तन प्रतिमान में परिवर्तन का एक चक्र चलता है, जैसे श्रुत से नैष्ठी चक्र चलते हैं। इस प्रकार के परिवर्तन में फैशन, सांस्कृतिक आंदोलन, अलंकरण नियंत्रण तथा स्वतंत्रता आदि सम्मिलित हैं।

चक्रीय परिवर्तन



इस सिद्धांत के समर्थक, समाज का परिवर्तन एक चक्र की भांति होता है, जिसमें एक के बाद दूसरी, तीसरी और इसी प्रकार अन्य अवस्थाओं के बाद फिर वही चक्र दोहराया जाता है।

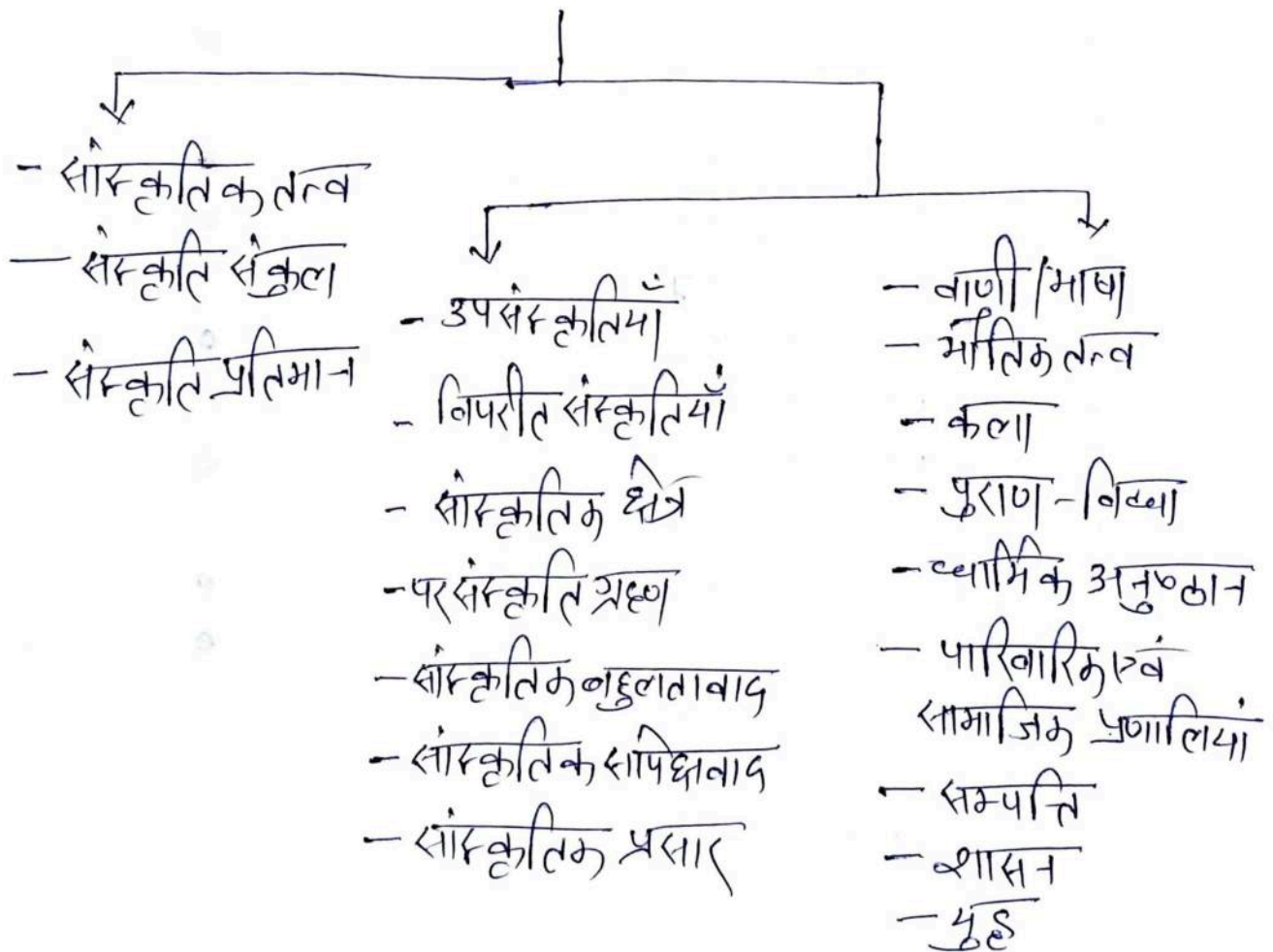
10703017

प्रश्न सं०-6

सांस्कृतिक परिवर्तन किस प्रकार समाज को प्रभावित करता है?

उत्तर— सभी समाजों की अपनी संस्कृति भौतिक एवं अभौतिक पदार्थों की प्रतिमानित समग्रता होती है। सभी संस्कृतियों का समान झुलावदार संगठन होता है, यद्यपि समाजों की संस्कृतियाँ भिन्न होती हैं।

सांस्कृतिक परिवर्तन



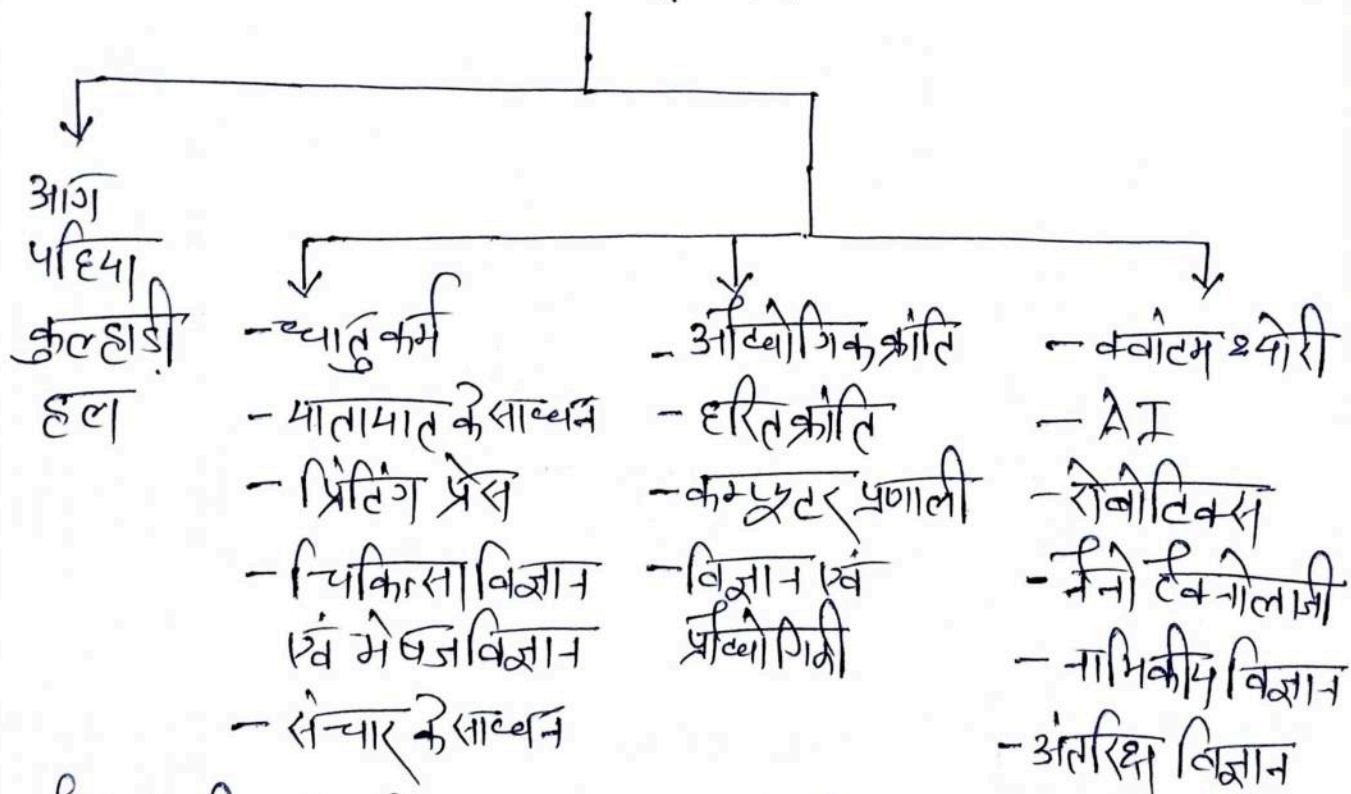
10703017

प्रश्न सं०-5

प्रौद्योगिकी परिवर्तन किस प्रकार समाज को प्रभावित करता है?

उत्तर— "आवश्यकता आविष्कार की जननी है" यह कहावत मानव सभ्यता के संदर्भ में कि जाती है। आदि काल से लेकर वर्तमान समय तक मनुष्य निरंतर आविष्कार करता जा रहा है, प्रौद्योगिकी का आदान-प्रदान मानव सभ्यता के विकास का परिचायक रहा है।

प्रौद्योगिकी परिवर्तन



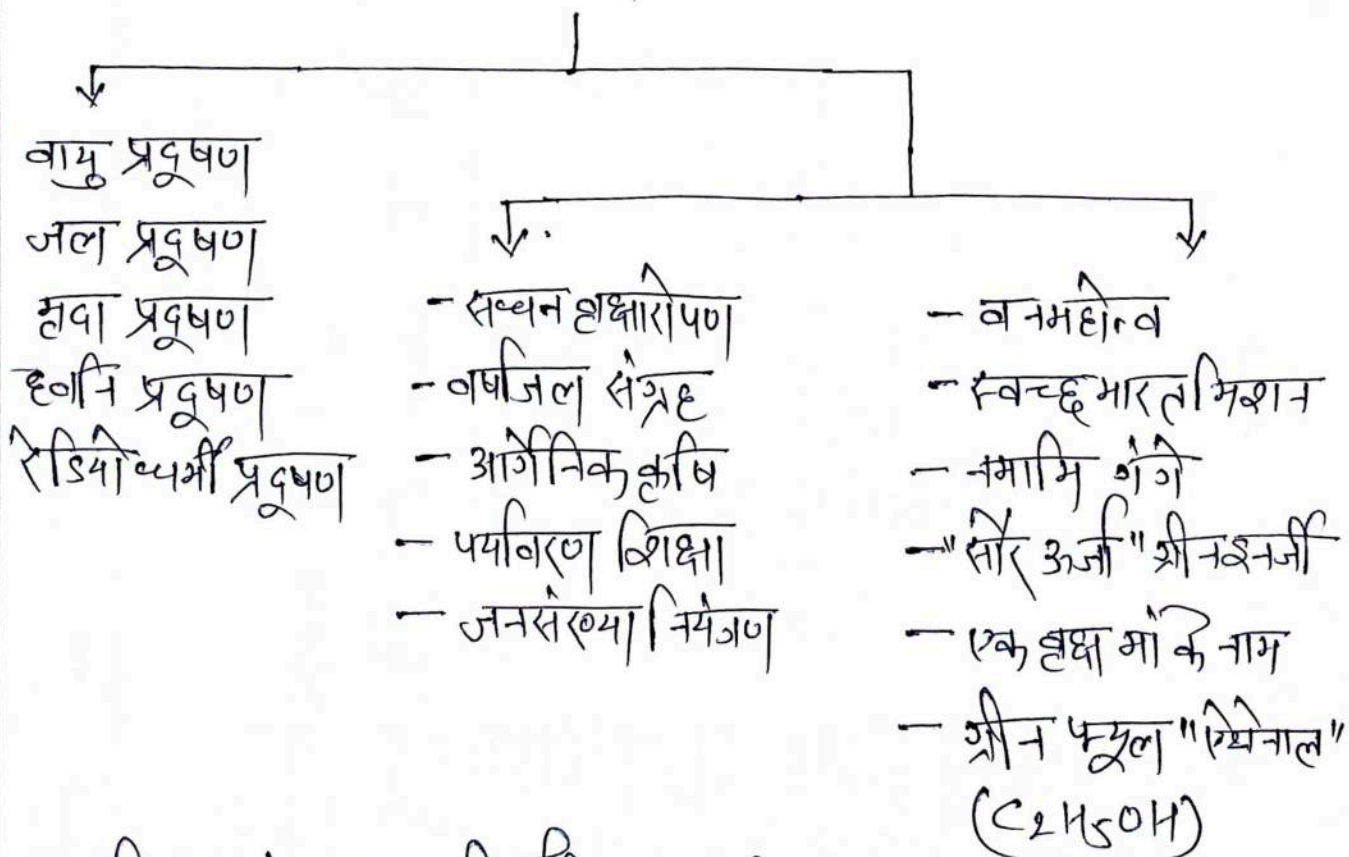
प्रौद्योगिकी परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन का समयगत पक्ष रहा है। प्रौद्योगिकी ने मनुष्य के जीवन को सरल बनाया है, जटिल समाज में प्रौद्योगिकी एक निर्णायक भूमिका निभा रहा है।

A070301T

प्रश्न सं०-५

पर्यावरण परिवर्तन किस प्रकार समाज को प्रभावित करता है?
उत्तर— पर्यावरण एवं विकास का द्वन्द्व, सतत विकास की सर्वसहमति पर अग्रसारित है। संपोषणीय विकास ही मानव सम्यता एवं प्रकृति के मध्य संतुलन ला सकता है, क्योंकि पर्यावरणीय अपक्षय मानव सम्यता के लिए अभिशाप साबित होगा।

पर्यावरण परिवर्तन



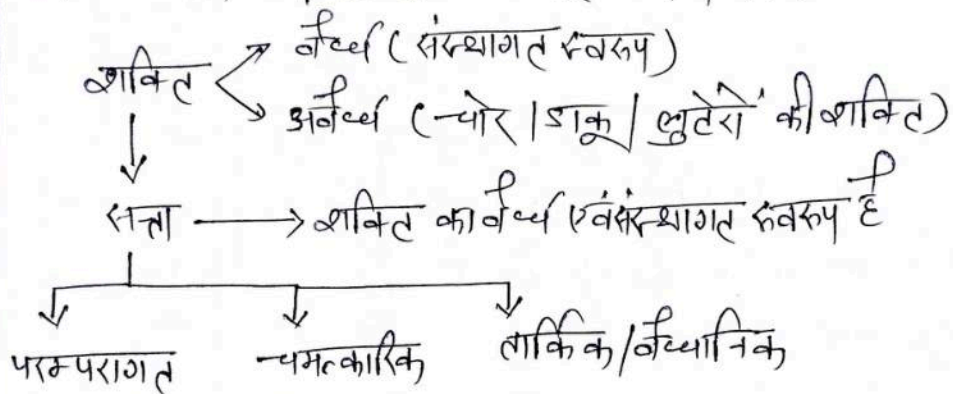
"पर्यावरण संरक्षण" की वैश्विक मुहिम में जन सहयोग के साथ-2 मानव के प्रति मानव का प्रेम भी समाहित है, भविष्य की दृष्टि में रखते हुए, पर्यावरण संरक्षण एक जनादोलन का रूप ले रहा है।

20203017

प्रश्न सं०-3

राजनीतिक परिवर्तन की व्याख्या करे?

उत्तर- मुन्ष्यों में राजनीतिक-चेतना किस समय और किस वातावरण में आती, इस विषय में इतिहास बहुत कम प्रकाश डालता है, बहूँया समाज का विकास, राजनीति से गहरा अझाव रखता है, इसकी निम्नवत् व्याख्या देलते हैं—



- (i) संसदीय प्रणाली (प्रतिनिधिक व्यवस्था)
- (ii) सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार
- (iii) स्वतंत्र, संवैधानिक निर्वाचन आयोग
- (iv) निष्पक्ष, पारदर्शी एवं नियमित निर्वाचन व्यवस्था
- (v) दल प्रणाली एवं निर्वाचित होने की स्वतंत्रता
- (vi) चुनाव प्रचार एवं गठबैधन की स्वतंत्रता
- (vii) स्वतंत्र प्रेस प्रणाली एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
- (viii) समतामूलक समाज, अवसर की समानता, लैंगिक समानता एवं सामाजिक-आर्थिक समावेशी व्यवस्था का निर्माण।

2070301T

प्रश्न सं०-2

आर्थिक परिवर्तन समाज को किस प्रकार प्रभावित करता है, स्पष्ट करें ?

उत्तर— आर्थिक तत्व समाज में प्रमुख तत्व है, क्योंकि जीवन के सभी रूप उस पर आधारित हैं और उसके द्वारा नियंत्रित होते हैं। अब हम आर्थिक परिवर्तन की चरणबद्ध व्याख्या करेंगे—

विकारी युग— आखेट एवं खान्धन संग्रहण

चरागाही युग— पशु अर्थव्यवस्था

कृषि युग— स्थायी निवास एवं वस्तु विनिमय व्यवस्था

आधुनिक युग— श्रम / पूंजी / आधुनिकी का सम्मिश्रण जिसने बाजारवाद एवं उपभोक्तावाद को प्रोत्साहन दिया।

- (i) वस्तु विनिमय प्रणाली
- (ii) मुद्रा प्रणाली (स्वर्ण एवं रजत मुद्राएँ)
- (iii) कागज मुद्रा एवं बैंकिंग प्रणाली का उद्भव
- (iv) संस्थागत रूप में बैंकिंग प्रणाली एवं मुद्रा
- (v) कागज मुद्रा का विस्तार एवं भिन्न व्याप्त की सांकेतिक मुद्राएँ
- (vi) प्लास्टिक मुद्रा (A.T.M. एवं क्रेडिट कार्ड)
- (vii) ई-बैंकिंग (R.T.D.S. एवं नेट बैंकिंग)
- (viii) डिजिटल बैंकिंग (मुद्रा का डिजिटल स्वरूप)
Pfm, गूगल पे, भीम एप, UPI आदि

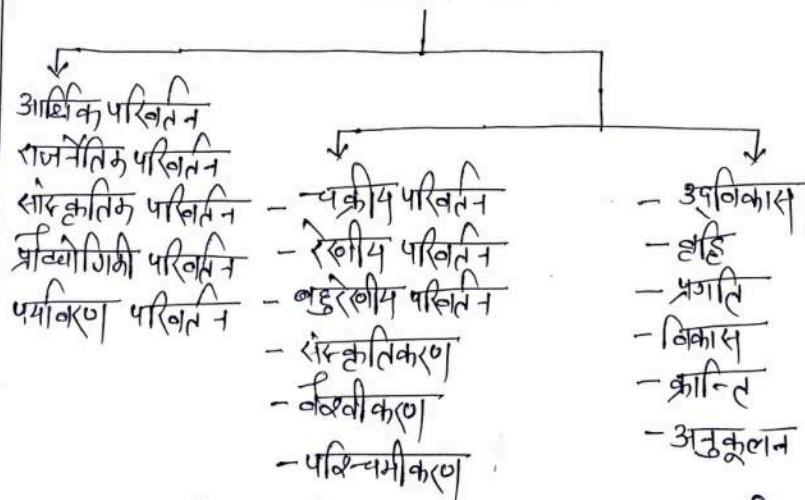
λ070301T

प्रश्न सं०-1

परिवर्तन सामाजिक क्या है, इसकी विभाजन व्याख्या करें ?

उत्तर- प्रत्येक प्रकार के परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन नहीं कहा जा सकता है। सामाजिक परिवर्तन मनुष्य एवं समूह अथवा एक समूह से दूसरे समूह के पारस्परिक सम्बन्धों में होने वाला परिवर्तन है। "मैक्सवर् एवं पेज" ने कहा कि "समाज परिवर्तनशील एवं गत्यात्मक दोनों हैं"।

सामाजिक परिवर्तन



इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि समाज सर्वदा परिवर्तनशील परिवर्तन है जिस का विकास, ह्रास एवं नवीनीकरण होता रहा है और जो परिवर्तनशील दशाओं के अनुरूप स्वयं को अनुकूलित करता रहा है।